'तेज साप्ताहिक मनोरंजन टैक्स १.५० रु.'
अंक १३ वर्ष १७, १ जुलाई १९८१

दीवाना

मुफ्त पोस्टर



कुत्ता, बिल्ली

13-81



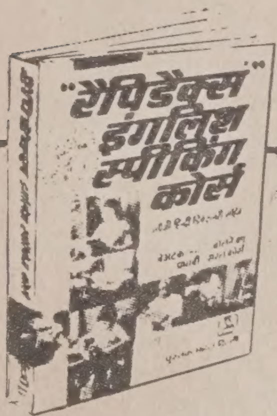
१.५० रुपये


if every thing
you wanted to know
about tv
seemed too complicated
has a beautiful answer
new arjun solid state
double shutter double speaker
sunmica cabinet
TV
solid state
A-194, Okhla Industrial Area, Phase-1
New Delhi-110020.

बोलचाल सीखिए

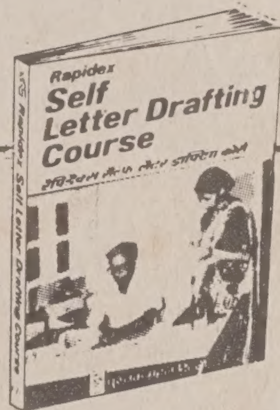
अंग्रेजी में

पत्र लिखना सीखिए



बड़े साइज के
464 पृष्ठ
मूल्य **21/-**
डाकखर्च
4/-

Big Size
332 Pages
Price 21/-
Postage
Rs. 4/-



रैपिडैक्स इंगलिश स्पीकिंग कोर्स

★ 80,00,000 अस्सी लाख से अधिक पाठकों द्वारा अंग्रेजी बोलचाल सीखने के लिए अपनाया गया सर्वाधिक चर्चित लोकप्रिय कोर्स।

★ कान्वेंट स्तर की शुद्ध व फर्राटेदार इंगलिश बोलना सिखाने वाली इस सरल व प्रभावी 'रैपिडेक्स' पद्धति पर आप पूरा भरोसा कर सकते है।

★ हिन्दी सहित भारत की 8 अन्य भाषाओं में भी प्रकाशित।

★ हिन्दी व प्रादेशिक भाषाओं के बहुत से दैनिक पत्रों द्वारा सराहा गया कोर्स।

★ विद्वानों छात्रों, व्यापारियों, कर्मचारियों दुकानदारों एवं गृहिणियों—यानि हर क्षेत्र के स्त्री-पुरुषों को लाभान्वित करने वाला कोर्स।

पैसे वापिसी की गारण्टी !

यदि आप 'रैपिडेक्स कोर्स' से सन्तुष्ट न हों तो कोर्स वापस भेज दें। डाकव्यय काट कर आपका पूरा पैसा वापिस भेज दिया जायेगा।

Rapidex Self Letter Drafting Course

अन्य पुस्तकों में दिए गए बने-बनाए (Ready-made) पत्रों द्वारा आप नकल तो कर सकते हैं लेकिन अपनी मन पसन्द और भावनानुसार पत्र बनाना नहीं सीख सकते। लेकिन इस कोर्स की मदद से ऐसा सम्भव है, क्योंकि

अंग्रेजी में सभी प्रकार के पत्र, चाहे वे

- व्यक्तिगत हों, सामाजिक हों व्यापारिक हों या नौकरी के लिये आवेदन पत्र हों;
- अपने या अन्य सरकारी दफ्तरों में लिखे जाने वाले हों;
- नाते रिश्तेदारों के बीच, सुख दुख के मौकों पर या पति-पत्नी व प्रेमी प्रेमिका के बीच हों;

...अर्थात् किसी भी विषय के तथा किसी भी मौके पर लिखे जाने वाले हों, आप स्वयं लिखने लगेंगे।

किसी भी बुक स्टाल से खरीदें या बी०पी०पी० द्वारा मंगाने का पता।

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006

कल्पना के बादलों की समाजवादी बरसात



बेसन के घोल की बूंदा बांदी हो। नीचे विशाल कढ़ाइयां खौलते तेल की तैयार रखी जायें। बरसात हो और तल तल बूंदियों की ढेरियां निकाले जाओ।



पहाड़ों में बर्फ के स्थान पर बासमती चावल के पके हुये दाने गिरें। हिमपात के स्थान पर भातपात हो।



बादलों से मूसलाधार पानी की धारों के स्थान पर सेवइयां अथवा नूडल निकलें



या ओलों के स्थान पर बादल शुगरक्यूब्ज बरसायें और चीनी के जमाखोर ब्लैकिये व्यापारी गम के गाने गायें।

दीवाना

अंक : १३ वर्ष : १० १ जुलाई १९८१

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	३५ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१८ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

मुख पृष्ठ पर

चिल्ली को बरसात ने घेरा
हाल खराब, जब हुआ सवेरा
पानी नाक से टपक रहा था
बार-बार वह झटक रहा था।
तंग आ गया वो कुछ ऐसे
नजर पड़ी तख्ती पर जैसे
अक्षर लिखा एक सीधा साधा
बातें कम और जुकाम ज्यादा॥

आगामी अंक में

★

फिल्म पैराडी लव-स्टोरी

★

ऐसा मौसम बरसात का

★

सवाल यह है?

★

मुफत पोस्टर - दृश्य

आपके पत्र

मैं दीवाना कब से पढ़ रहा हूं, यह मुझे स्वयं भी नहीं मालूम है परन्तु अब भी दीवाना का उतना ही दीवाना हूं जितना पहले था। दीवाना का अप्रैल फूल अंक पढ़ा, मजा ही आ गया। परन्तु एक बात खटकती है चित्र-कथा के साथ चित्रकार का नाम नहीं रहता और कई स्त[illegible] जैसे चिल्ली लीला, परोपकारी आदि भी आजकल नहीं आ रहे। मोटर साईकिल का ब्लोअप पोस्टर पसन्द आया। एक बार चिल्ली का ब्लोअप दें।

एक सुझाव भी—आप दीवाना का एक अविस्मरणीय विशेषांक भी निकालें, भले ही मूल्य अधिक हो, परन्तु पढ़ने में मजा आ जाये, धन्यवाद और शुभकामनाओं सहित। दीनू से[illegible] —भरतपुर

आपका एक नियमित पाठक होने पर मुझे गर्व है, अक्सर हास्य व्यंग आजकल बड़ा सेहत-मन्द साबित होता है। कृपया फिल्म पैरोडी फिर से शुरू कर दीजिये।

एकनाथ राय—बम्बई

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के —



श्रवण कुमार श्रेष्ठ 'अमित'—गोरखपुर

प्र०: उनकी निगाहें नाज पर लैसंस क्यों नहीं,
वे भी तो शूट करती हैं, बन्दूक की
तरह ?

उ० : **हो जाता है घायल मगर मरता
नहीं कोई,**
फिर क्या ज़रूरत है भला लाइसैंस की
उन्हें ?

इफ्तेखार जलील बेग—कलकत्ता

प्र०: क्या खाते पीते हैं काका भाई,
इतनी अक्ल कहाँ से आई ?

उ०: न मुरारजी ब्रांड ही, कभी पिया है पेय।
**घी-मक्खन-मेवा नहीं, काकी अक्कल
देय।।**

बध्यासिंह निराला, पनागर (जबलपुर)

प्र०: मैं जीप लेकर हाथरस आ रहा हूं,
काकीजी को मेरे साथ **भेज देंगे ?**

उ०: काकी में कुब्बत बहुत, गोदी में भर
लेइ।
तुमको फेंके सड़क पर, जीप हरण कर
लेइ।।

एस० के० तनेजा, शंकरगंज—इन्दौर

प्र०: दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता पहुंचने को
रेल और बस हैं, भगवान के पास जाने
को क्या है ?

उ०: रेट, रेल-बस के बढ़े, बचत करो
श्रीमान।
बीच सड़क पर लेटिए, उठा लेंय
भगवान।।

प्रवीर शंकर, रमना (मुजफ्फरपुर)

प्र०: तन रहता अस्वस्थ अब, मन रहता
गमगीन।
ऐसी युक्ति बताइए, जग दीखे रंगीन।।

उ०: आजाएं इस देश में, जब टी०वी०
रंगीन।
सभी समस्या होंय हल, मन में रखो
यकीन।।

श्याम गाजनानी, मुर्तिजापुर (अकोला)

प्र०: सामान की चोरी हो जाये तो थाने में
रिपोर्ट लिखाते हैं दिल की चोरी हो
जाये तो ?

उ०: दिल लेकर वह उड़ गई, मार गई है
चोट।
**दिलजानी के बाप पर, जाकर करो
रपोट।।**

कु० विद्यावती, नागपुर (महाराष्ट्र)

प्र० :कोई लड़का बेवफाई करता है तो उसे
बेवफा कहा जाता है, लड़की बेवफाई
करे तो ?

उ०: व्याकरण की दृष्टि से सुलझाइए यह
फिलसफा।
लड़की होगी बेवफ़ी, यदि लड़का
होगा बेवफ़ा।।

राधेश्याम पाहवा, राजेन्द्रनगर

प्र०: आंसू और मोती में कौन महत्त्वपूर्ण
है ?

उ०: रोए विरहिन प्रेयसी, प्रेमी मन मुसकाँय।
गालों पर आंसू झरें, मोती शर्मा
जायँ।।

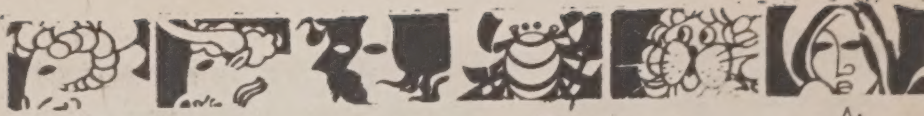
प्रेमबाबू शर्मा, बगीची पीरजी, दिल्ली

प्र०: पत्नी द्वारा, पति की अच्छी खातिर कब
होती है ?

उ०: **जब पहिली तारीख को, बाबू वेतन
लायँ,**
**ठुमक-ठुमक कर बीबियाँ, पति पर प्यार
लुटायँ।**

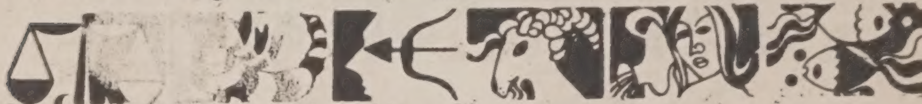
काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली - ११०००२.


होंगे बच्चे स्वस्थ
फले फूलेगा बचपन
इन्हें पिलाओ....
मुग़ली घुट्टी 555
अ हा...! मीठी-मीठी
MUGLI
JANAM
GHUTTI
555®
No 555
SRIRAM AYURVED BHAWAN
NAVIN SHAHDARA
DELHI 110032
पुष्ट व सदा निरोगी
रखने के लिए
पाँच वर्ष की आयु तक
दैनिक प्रयोग कराइए
बच्चों को स्वस्थ बनाइए
अनेकों
माता-पिता
द्वारा
प्रशंसित.....
श्रीराम आयुर्वेद भवन दिल्ली-110032



आपका भविष्य

पं॰ कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं॰ हंसराज शर्मा



मेष : लाभ यथार्थ, खर्चा बढ़ेगा, मिश्रित [illegible] मिलेंगे, विरोधियों से [illegible], मित्र सहयोग देंगे, कारोबार भी ठीक़ चलेगा।

वृष : समस्याएं घटती-बढ़ती रहेंगी, नई वस्तुओं की खरीद, काम देर से बनेंगे, यात्रा सफल, कारोबार ठीक चलेगा।

मिथुन : कुछ परेशानियों के बावजूद भी हालात में सुधार होगा, लाभ अच्छा [illegible], यात्रा सावधानी [illegible]

[illegible] : मिले-जुले फल मिलेंगे, कामों में सफलता कुछ देर बाद [illegible], आय से व्यय अधिक होगा, अन्य हालात ठीक चलेंगे।

सिंह : सावधानी से रहें, झगड़े आदि से परेशानी, नई उलझनें पैदा होंगी, खर्चा बढ़ेगा, मित्र साथ देंगे।

कन्या : व्यय के साथ-साथ लाभ भी होगा, गुस्से पर नियन्त्रण रखें, वैर-विरोध से परेशानी, जल्दबाजी से काम लेना ठीक नहीं।

तुला : रोजगार फिर मन्दा भी आर्थिक लाभ होता रहेगा, भाग्य सहारा से काम बनते जायेंगे, कठिन परिश्रम।

वृश्चिक : लाभ खर्च बराबर, बड़े लोगों से सहयोग, सेहत कमजोर, कामधन्धों में बाधा आएगी, हालात सुधरेंगे।

धनु : लाभ सामान्य होगा, यात्रा में परेशानी, घरेलू झंझट अधिक रहेंगे, संघर्ष काफी रहेगा, अच्छी संगत से बिगड़े काम बन जायेंगे।

मकर : भाग्य सहारा देगा और परिश्रम द्वारा कारोबार आगे बढ़ेगा, शत्रु परास्त, संघर्ष काफी रहेगा, रुके काम बनेंगे।

कुम्भ : कारोबार ठीक चलेगा, आत्मबल से अभीष्ट कार्य सिद्ध होंगे, यात्रा व्यर्थ की ही होगी, हानि होकर लाभ होगा।

मीन : लाभ कम एवं खर्च ज्यादा, कामधन्धों में परेशानी, जल्दबाजी से काम न लें वर्ना काम बिगड़ सकते हैं, लाभ अच्छा होगा।

बिगड़ू चाचा

शिशर विक्रांत

'कहिए सुस्तराम जी, कैसे हालचाल हैं?' या 'कहो भाई ढिलमिल खैरियत तो है?' आदि वाक्यों से यदि आप उनकी कुशल-क्षेम भी पूछें तो वह उसी प्रकार नाराज होकर, खिसियाए चेहरे से आपको खा जाने वाले अन्दाज से देखेंगे, जिस तरह भोले ग्राहक के सामान को तौलते समय दुकानदार के डंड़ी मारने के रहस्य को आप, ग्राहक के सामने उसी समय उजागर कर दें—बिगड़ू चाचा मोहल्ले में नए आए एक सज्जन को, फुर्तीसिंह जी के बारे में इस प्रकार जानकारी दे रहे थे, जैसे कि सरकार के किसी रहस्यमय मामले की तरोताजा खबर सुना रहे हों। उनकी हर बात बेसिर-पैर की ही होती थी।

वह सज्जन बिगड़ू चाचा की बातें सुनते हुए इसी असमंजस में पड़े थे कि फुर्तीसिंह जी के बारे में उनका दिया हुआ बयान सत्य मानें, या बिगड़ू चाचा की हर बात की तरह इसको भी बेसिर-पैर की समझें। मुश्किल का कारण था कि उन्होंने बिगड़ू चाचा के बारे में पहले ही सुन लिया था कि इन महाशय ने मोहल्ले के न जाने कितने दर्जन बच्चों को अपनी अजीबो-गरीब बातों के जरिये बिगाड़ दिया था, तभी लोग उन्हें मोहल्ले वालों के द्वारा दिया हुआ उधार नाम बिगड़ू के नाम से पुकारते थे। बेशक वह अपना यह नाम सार्थक भी कर रहे थे।

बिगड़ू चाचा से मोहल्ले भर को यही सबसे बड़ी शिकायत थी कि उन्होंने अपने संपर्क में आए, सत्तर प्रतिशत बच्चों को नेता बना दिया था। मोहल्ले वाले उनसे नहीं, बल्कि उनकी सिर फिरी बातों से डरते थे। कुछ तो यहाँ तक कहते कि बिगड़ू चाचा पहले मदारी थे, तभी इतनी लच्छेदार बातें करते हैं तो कोई उनके बारे में स्पष्ट करता हुआ कहता, 'अरे बिगड़ू चाचा तो अफ्रीका के जंगलों से जादू सीखकर आए हैं, इसी वजह से तो उनकी बातें ऐसी जादू भरी होती हैं कि दिमाग वहां से हटने की इजाजत ही नहीं देता, चाहें कितना ही जरूरी काम क्यों न हो।'

'बिल्कुल ठीक कह रहे हो तुम भइया। देखा नहीं उस दिन, लट्टू हलवाई के दूध में उबाल आ-आकर सारा दूध जल गया। पर लट्टू को इस बात की खबर होने पर भी वह बिगड़ू चाचा की बातें सुनता ही रहा। सचमुच ही वह जादू जानते होंगे'—एक दूसरा, इस ढंग के तर्क को मजबूत करने के लिए इस प्रकार के

उदाहरण भी रख देता।

बहरहाल, बिगड़ू चाचा की कोई बुराई करता या बड़ाई, उनकी थुलथुली सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ता था। उनको इस बात का गर्व था कि उनके एक लफ्ज़ के हुक्म से, उनके शागिर्द सारा शहर बन्द करवा सकते हैं।

और बिगड़ू चाचा, इस समय उन साहब को अपनीं बातों के लच्छों में लपेटकर, अपने शागिर्दों की फेहरिस्त में एक नाम और बढ़ाने को जी-जान से जुटे थे। 'लेकिन चाचा, मेरे मकानमालिक यानी फुर्तीसिंह जी में, मुझे तो ऐसा सुस्ती का कोई लक्षण नहीं नजर आता, जो उनको सुस्तराम के नाम से विभूषित करता हो।' —नए साहब ने, उनकी बात को काटते हुए अचरज से कहा।

बिगड़ू चाचा, उनकी बात सुनकर झल्लाए, 'अरे भाई, अभी आप नहीं समझेंगे, इसका रहस्य। वैसे हम कोई गलत इरादे से यह बात नहीं कह रहें हैं। वो आपके मकान मालिक हैं, जैसा सम्बन्ध चाहें, बनाएं। हम तो बस इसलिए कह रहे हैं कि जब कभी आप उदास हों, उनसे ऐसा कह कर मन बहला सकते हैं। कोई झंझट हुआ तो उसका जिम्मेदार मैं बैठा ही हूं।'

उस समय तो वह साहब चले आए। पर इस मौके की तलाश में लग गए कि कब उदास हों, और कब बिगड़ू चाचा के फार्मूले से लाभ उठाया जाए। बेचारे परेशान थे, मौका मिलता ही नहीं था। कहीं बाहर से आकर घर में प्रवेश किया नहीं कि पत्नी की कर्कश आवाज में एक दर्जन कामों को निपटाने की सूचना तत्काल प्राप्त हो जाती। और साहब घर में आते ही, दम भर में बाहर।

आखिरकार, कई हफ्तों बाद, एक दिन उन साहब की मुराद पूरी हो ही गई। पत्नी, पांचों बच्चों सहित मायके गई हुई थी। छुट्टी का दिन था और साहब खाली थे। फुर्तीसिंह जी भी घर में, अपने अनावश्यक कार्यों में व्यस्त थे। जैसे कि एक कमरे से कबाड़ को निकाल कर और उसे साफ कर, दूसरे साफ कमरे में कबाड़ भरकर, जी-जान से उसे बूचड़ खाना बनाने में जुटे थे।

नए साहब को एक पत्रिका पढ़ते-पढ़ते अचानक बिगड़ू चाचा की बात याद आ गयी। वह फौरन किताब छोड़कर बैठ गए। फिर सोचने लगे कि बिगड़ू चाचा ने यह भी फरमाया था कि 'जब आप उदास हों। एक नई मुश्किल यह आई कि श्री मान जी से आज उदासी कोंसों दूर थी। श्रीमती जी के जाने पर शत प्रति-

शेष पृष्ठ ४१ पर

मोटू-पतलू ।

कुछ दिन पहले मोटू का जन्म दिन था। उसके जिगरी दोस्तों ने इस अवसर पर उसे सुन्दर-सुन्दर उपहार दिये थे और उसके जिगरी दुश्मन घसीटा राम ने उसे पत्रबम भेजा था। पत्रबम को लैटर बाक्स में पोस्ट करने के बाद जन्म दिन की पार्टी में माल उड़ाने के लिए घसीटा राम मोटू के घर की ओर चल दिया। रास्ते में प्रसिद्ध वैज्ञानिक डाक्टर डबल जीरो की प्रयोगशाला आई तो घसीटा राम ने सोचा, अन्दर चलकर देखूं कि डाक्टर डबल जीरो ने कौनसी नई खोज की है।

प्रयोगशाला के अन्दर बड़े-बड़े विचित्र और भयंकर यंत्र देखकर घसीटा राम दंग रह गया। ऐसी मशीनों और कलपुर्जों की वह कल्पना भी नहीं कर सकता था। वहीं उसे एक बक्स दिखाई दिया, जिस पर लिखा था 'एटमिक गैस सलैण्डर' घसीटा राम ने इधर-उधर देखा। वहां कोई नहीं था। उसने मौका गनीमत जाना और गैस का सलैण्डर लेकर चम्पत हो गया।

पर घसीटा राम का यह ख्याल गलत था कि उसे कोई नहीं देख रहा है, वास्तव में वहां डाक्टर डबल जीरो नहीं था पर उसके बनाये आटोमैटिक मशीनी आदमी वहां निगरानी कर रहे थे। जैसे ही घसीटा राम सलैण्डर लेकर चला, एक आटोमैटिक मशीनी आदमी उसके पीछे लग लिया। उससे पीछा छुड़ाने के लिए घसीटा राम मोटू की बर्थडे पार्टी में पहुंचा तो उसने गैस के सलैण्डर का डिब्बा जन्म दिन पर आये उपहारों के डिब्बों में रख दिया।

उसके पीछे-पीछे आटोमैटिक रोबोट भी वहां पहुंच गया। उसके मशीनी दिमाग में शायद कोई पेंच ढीला रह गया था, या डाक्टर डबल जीरो कुछ पुर्जे फिट करने में गलती कर गया था, जिस के कारण रोबोट हर बात का मतलब उल्टा समझता था और बात-बात में गड़बड़ करके उसने जन्म दिन की पार्टी में आये सब लोगों की खाट खड़ी कर दी थी और इसी गड़बड़ में मोटू के नाम भेजा पत्रबम घसीटा राम ने खुद खोल लिया था और उसके धमाके ने घसीटा राम को तोड़-फोड़ कर अधमरा कर दिया था।

दो सप्ताह के लम्बे इलाज के बाद अब बड़ी मुश्किल से घसीटा राम की जान बची है। पर अब इसका जानलेवा बना हुआ है मशीनों और कलपुर्जों का बना वह आटोमैटिक रोबोट जो बर्थ डे पार्टी समाप्त होने पर घसीटा राम के साथ उसके घर आ गया था और अब जूडो मास्टर के साथ वहीं रहने लगा है।





रोबोट को अपने घर में कैद करके मैंने बाहर से ताला लगा दिया है। हम मोटू-पतलू के घर चलते हैं। हो सकता है इस बीच रोबोट की बैट्रियां आप से आप डिस्चार्ज हो जायें या इतनी अधिक चार्ज हो जायें कि यह सीलिंग फैन से लटक कर आत्महत्या कर ले।
तुमने डाक्टर डबल जीरो की प्रयोगशाला से गैस चुराने की गलती क्यों की ?
इसका जवाब सीधा-साधा है। तुमने देखा उस सरफिरे डाक्टर ने कैसा चलता पुर्जा रोबोट बनाया। अगर सही काम करे तो वह कितना कीमती है तुम इसका अंदाजा भी नहीं लगा सकते। और वह गैस भी इतनी काम की चीज है। तो तुम उसकी कीमत का भी अंदाजा नहीं लगा सकते। आजकल संसार भर में गैस की कमी के कारण हाहाकार है। डाक्टर डबल जीरो की यह ईजाद अगर गैस संकट का इलाज साबित हुई। तो यह सोच कर ही तुम्हारा हार्ट फेल हो जाएगा कि मैं आने वाले दिनों में अरब देशों के शेखों और बादशाहों से कितना बढ़-चढ़कर अमीर बनने वाला हूं।
मोटू-पतलू ने अब तक वह गैस सलेण्डर अपनी रसोई के चूल्हे में न जला दिया हो ?
अगर उन्होंने ऐसा किया होगा तो मैं उन्हें चूल्हे में फूंक दूंगा।
घसीटा राम और जूडो मास्टर मोटू-पतलू के घर पहुंचे
मोटू-पतलू
तो वे गैस के सलेण्डर से गुब्बारे भरने में लगे हुए थे।
सुपर पावर गैस
अरे इतनी कीमती गैस का क्यों सत्यानास कर रहे हो ?
हमारी गैस है।
हम इसका जो चाहें करें।



तुम्हारी गैस है ? कैसे है यह तुम्हारी ?
पिछले दिनों कोई हमें बर्थडे के उपहार में दे गया था।
कोई कौन दे गया था ? मैं दे गया था उपहार में, इसलिए यह गैस मेरी है।
चलो मान लिया तुम दे गये थे उपहार में। पर उपहार में दी चीज पर अब तुम्हारा क्या अधिकार रहा ? अब यह हमारी है।
ठीक कह रहे हैं। उपहार अब उसका, जिसे दे दिया गया।
फिर तो यह गैस का सलेंडर हथियाने की कोई और तरकीब सोचनी पड़ेगी।
गैस के डिब्बे में से यह बड़ा गुब्बारा भी निकाला है। चलो अब इसे फुलाओ।
सुपर पावर गैस
यह तो गुब्बारे फुलाने वाली मामूली गैस सलेंडर है। इसकी बजाये मुझे मोटू के बर्थडे पर आये उपहारों में से कोई और चीज उड़ाने की बात सोचनी चाहिए।
गैस का गुब्बारा बहुत बड़ा होकर अब पूरे कमरे में समाता जा रहा था।
अरे गैस का बटन बन्द करो
बटन जाम हो गया है। बन्द नही होता।
गैस का बड़ा गुब्बारा फूल कर अब पूरे कमरे मे फसता जा रहा था।
गैस का सलेंडर हाथ से छूट गया। पता नहीं अब कहाँ है।
हम गुब्बारे और दीवार के बीच फस कर मर जायेंगे।
?

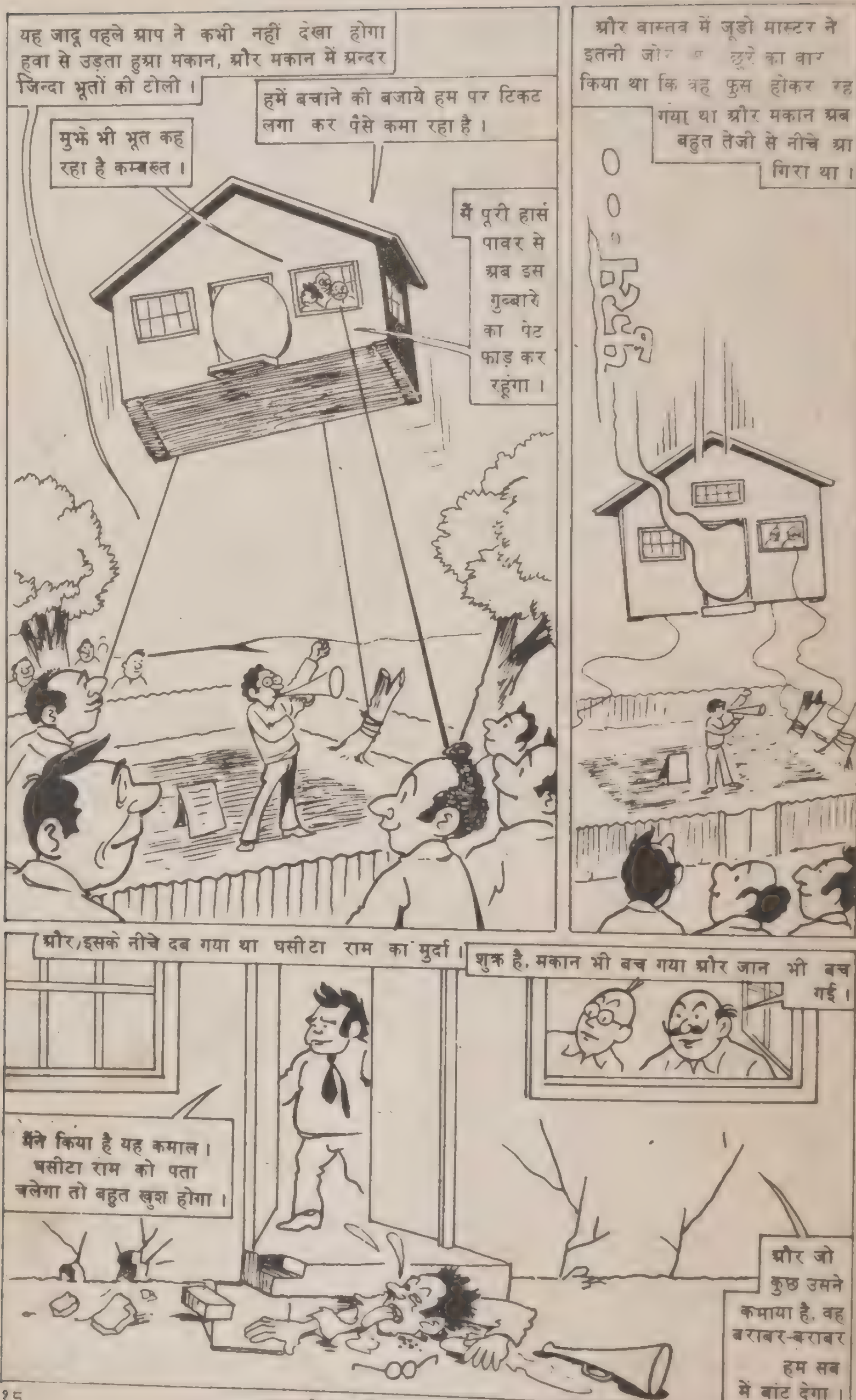

जिस कमरे में गुब्बारा फूल रहा था. उसके दरवाजे से निकल कर वे सब दूसरे कमरे में ग्रा गये ।
घसीटा राम उस कमरे में ही रह गया है ।
गुब्बारे ग्रौर दीवार के बीच फस कर मारा जायेगा ।
गुब्बारे के नीचे मे निकल कर में दूमरे कमरे में जाकर देखता हूं ।
यह सुपर पावर हाई स्पीड एटमिक गैस का गुब्बारा फूलता ही जायेगा घंसीटा राम । ग्रौर तुम्हें दीवार से भींचकर मार डालेगा । जान बचानी है तो गुब्बारे के नीचे मे निकल कर मेरे माथ दूसरे कमरे में ग्रा जाग्रो ।
तुम ग्रपनी जान बचाने की चिन्ता करो । मैं इस दो पैसे की गैस में इन्ट्रस्टिड नहीं हूं । मैं तो बर्थ डे के उपहारों में मे कुछ ग्रौर छांट कर यहां मे रफूचक्कर हो रहा हूं ।
नहीं ग्रा रहा घसीटा राम । वह बाहर के दरवाजे से निकल कर ग्रपने घर जा रहा है ।
ग्ररे चक्कू मार कर इस गुब्बारे को फाड़ दो ।



चक्कू पूरा घुस गया है। पर गुब्बारा फटने का नाम नहीं लेता।
सुपर पावर हाई स्पीड एटमिक गैस की तरह लगता है। डाक्टर डबल जीरो ने गुब्बारा भी किसी हाई पावरफुल पोलिस्टर फाईबर, सेंथैटिक, रबड़ से बनाया है।
दूसरे कमरे में अब तक घसीटा राम ने अपनी पसन्द का उपहार छांट लिया था।
इसके फूल पत्ते खाने से आदमी का हाजमा ठीक रहता होगा। यह ठीक रहेगा। इसे ले उडूं।
अब तक गुब्बारे ने बढ़ते-बढ़ते अपना दबाव इतना बढ़ाया था कि उसने घसीटा राम को बाहर के दरवाजे तक धकेल दिया था।
मकान कुछ हिल रहा है। पता नहीं क्या बात है।
लगता है कोई गड़बड़ होने वाली है।
और अब तक वह गड़बड़ हो चुकी थी। गैस के बड़े गुब्बारे ने मोटू-पतलू का मकान जड़ से उखाड़ कर हवा में उड़ा दिया था और जैसे ही घसीटा राम ने घर से बाहर निकलने के लिए दरवाजे से बाहर कदम रखा था, वह आसमान से ऐसे नीचे गिर रहा था, जैसे कुतुब मीनार से कूदा हो।
हाय मेरी मां।


मैं मोटू-पतलू के घर के दरवाजे से निकला था और गिरा ऐसे हूं, जैसे किसी ने मुझे एवरेस्ट की चोटी से धक्का दे दिया हो।
घसीटा राम ने ऊपर गर्दन उठाई तो मोटू-पतलू के मकान को हवा में उड़ता हुआ देखकर दंग रह गया।
अरे बाप रे
सुपर पावर हाई स्पीड एटमिक गैस का गुब्बारा हमारा घर ले उड़ा है। हमें बचाने के लिए कुछ करो।
यह रस्सियां पेड़ों के तनों से बांध दो।
मोटू-पतलू ने मकान में ऊपर से और घसीटा राम ने पेड़ों के तनों में नीचे से रस्सियां बांधी तो मकान और ऊपर उड़ने से रुक गया।


रस्सियों के सहारे अब नीचे उतर कर जान बचाओ।
केवल अपनी जान नहीं हमें मकान भी बचाना है।
और झटके से एक भी रस्सी टूट गई तो मकान का बैलेंस बिगड़ जाएगा। फिर न हम बचेंगे और न मकान।
उधर घसीटा राम के दिमाग ने इस स्थिति से लाभ उठाने की बात सोचनी शुरू कर दी थी।
चढ़े तवे पर अपनी रोटियां सेंक ले घसीटा राम। मोटू-पतलू का पूरा मकान ले उड़ी। यह सुपर पावर, हाई स्पीड, एटमिक गैस तो बड़े काम की चीज निकली।
आईये साहेबान, मेहरबान, कदरदान। हवा में उड़ता मकान देखिये।
बंगाल के जादूगर घसीटा का मतवाला जादू। देखने की फीस केवल एक रुपया।



आगामी अंक में इन सर फिरों से फिर मिलिये।

रहस्यमयी चाँदी की मकड़ी

—प्रेतनाथ

भाग — ४

तीन दिन तक प्रिंस पॉल उसी दुछत्ती में खाने पीने के बिना छुपे रहे क्योंकि मकड़ी का जाला तोड़े बिना संगीतज्ञों के परिवार के लोग उन्हें खिला पिला नहीं सकते थे। और इसी कारण उनके जीवन की रक्षा हुई। अन्त में मेरे पूर्वज ने बाहर निकल कर गिरजे का वो घंटा बजाया जिसे हम प्रिंस पॉल का घंटा कहते हैं, घंटे की आवाज से उनके अनुयायी इकट्ठे हो गये और विद्रोहियों को शहर से भगा दिया।

प्रिन्स पाल ने राजसिंहासन सम्भालने के बाद तरानिया के सबसे कुशल जौहरी द्वारा बनाई चाँदी की मकड़ी को गले में चाँदी की चेन में पहना। उन्होंने चाँदी की मकड़ी को तरानिया का राष्ट्रीय चिह्न तथा शासक शाही परिवार का शाही निशान करार दिया। तथा उन्होंने हुक्म दिया कि उस समय के बाद किसी भी युवराज का राजतिलक तब तक नहीं हो सकता जब तक वो प्रिंस पॉल की चाँदी की मकड़ी वाली चेन गले में न पहने।

उस दिन से ही मकड़ी तरानिया के लिये सौभाग्य का चिह्न है। अपने घर में मकड़ी का जाला देख कर गृहणियाँ प्रसन्न होती हैं। जालों को छेड़ा नहीं जाता और कोई भी कभी जानबूझ कर किसी मकड़ी को हानि नहीं पहुँचाता।

'तुम मेरी माताजी को इससे कभी भी सहमत नहीं कर पाओगे उन्हें मकड़ी बहुत ही गंदी तथा जहरीली लगती है,' महिन्दर बोला।

''बात इसके बिलकुल विपरीत है'', राजू तुरन्त बोला, ''वास्तव में मकड़ी बहुत ही साफ़ जीव है, वो अपनी सफ़ाई छोटी बिल्लियों के समान करती रहती है। और चाहे ब्लैकविंडो मकड़ी कुछ जहरीली होती है, वो कभी तंग किये गये बिना नहीं काटती। टैरनटुला नामक बड़ी-बड़ी मकड़ियाँ भी इतनी ख़तरनाक नहीं होतीं जैसी अक्सर समझी जाती है। परीक्षणों से पता चला है कि उन्हें अधिक सताने पर ही वो काटती हैं। सारे संसार की अधिकतर मकड़ियाँ हानिकारक नहीं होतीं, अपितु छोटे-छोटे कीट पतंगों को खा कर उनसे हमारी रक्षा करती हैं।''

''ये ठीक है, जोरो ने कहा, ''यहाँ तरानिया में कोई भी हानिकारक या जहरीली मकड़ी नहीं होती। जिसे हम प्रिंस पॉल की मकड़ी कहते हैं वो यहाँ की सबसे बड़ी मकड़ी होती है। ये मकड़ी अक्सर अपने जाले घर से बाहर बनाती है परन्तु कभी कभी घर में आ जाती है। जो जाला श्याम तुम हटाने वाले थे वो इसी मकड़ी का था, ये मकड़ी बहुत सुन्दर काले रंग पर सुनहरी निशानों वाली होती है। इसके इस जाल का बहुत ही अच्छा शगुन है। इसका अर्थ है तुम मेरे लिये भाग्यशाली साबित होगे और मेरी सहायता करोगे'।

''अच्छा हुआ तुमने मुझे जाला हटाने से रोक लिया, परन्तु तुम्हारी समस्या क्या है ?''

जोरो हिचका परन्तु फिर उसने सिर हिलाया।

''मेरे ख्याल से इस बात को मेरे सिवाय

कोई नहीं जानता'' वह बोला, ''परन्तु मुझे पूरा विश्वास है डयूक स्टीफन को भी इसका पता है। हमारे देश की प्राचीन रीति के अनुसार राज तिलक के समय नये युवराज को प्रिंस पॉल की मकड़ी वाली चेन गले में पहननी होती है, इसके बिना राज तिलक असम्भव है। और मुझे भी मकड़ी पहननी है दो सप्ताह बाद ही मेरा राज तिलक है। परन्तु मैं कैसे पहनूँगा?''

''परन्तु तुम पहन क्यों नहीं सकते'' महिन्दर ने पूछा।

''जोरो का मतलब है, क्योंकि मकड़ी की चोरी हो गई है,'' राजू बोला, ''क्यों ठीक है न जोरो?''

जोरो ने जोर से हाँ में सिर हिलाया।

''उसे चुरा लिया गया है और उसके बदले दूसरी मकड़ी उसमें रख दी है, परन्तु बदली हुई मकड़ी से काम नहीं चलेगा। यदि मुझे असली मकड़ी न मिल पाई तो मेरा राज तिलक निर्धारित समय पर नहीं हो पायेगा। उसकी ढूंढ़ मचेगी, हँगामा और तहकीकात होंगी और यदि ऐसा हुआ—परन्तु नहीं, मैं इस विषय में चुप रहूँगा।''

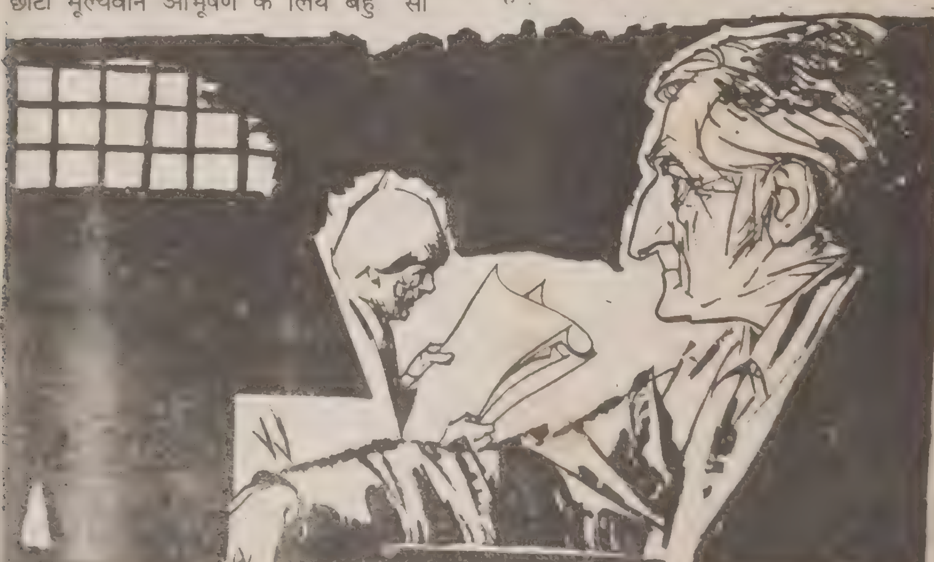
''मुझे मालूम है तुम लोग सोच रहे हो छोटी मूल्यवान आभूषण के लिये बहु सा शोर गुल। परन्तु तरानियावासियों के लिये इस छोटी सी चाँदी की मकड़ी का उतना ही महत्व है जितना इंगलैंड के राजा के लिये हीरों के ताज का।''

''नहीं शायद इससे भी अधिक क्योंकि ये शाही-परिवार का चिह्न है,तरानिया में कोई भी इस की नकल की मकड़ी बना कर नहीं पहन सकता। केवल तरानियों की सेवा के उच्च सम्मान में राज की ओर से मिली चाँदी की मकड़ी ही पहनी जा सकती है।''

''हमारा छोटा सा देश है परन्तु हम अपने रीति रिवाज़ों और परम्पराओं को आज के बदलते आधुनिक युग में भी पूर्ण रूप से मानते हैं। मेरे विचार से हम इन परम्पराओं पर और भी कट्टर हैं क्योंकि हमारे चारों और बहुत सी तबदीली हो रही हैं। तुम जासूस हो तथा तुम मेरे मित्र भी हो, क्या तुम सोचते हो कि तुम असली चाँदी की मकड़ी मेरे लिये ढूंढ़ सकोगे?''

राजू ने सोचने की मुद्रा में निचला होंठ दबाया।

''मै कह नहीं सकता जोरो,'' वह बोला, ''क्या ये मकड़ी जीवित मकड़ी जितनी ही है?''



"लगभग भारतीय अठन्नी के बराबर' जोरो ने सिर हिलाते हुए कहा।

"इसका मतलब हुआ कि मकड़ी बहुत छोटी है तथा इसे कहीं भी छिपाया जा सकता है, और हो सकता है इसे किसी ने नष्ट ही कर दिया हो।"

'मेरे ख्याल से नहीं', जोरो ने उसे बताया, "नहीं मुझे पूरा विश्वास है उसे नष्ट नहीं किया गया। नष्ट करने के लिये ये बहुत महत्वपूर्ण है। और जहाँ तक छिपाने का प्रश्न है, तुम ठीक कहते हो। परन्तु जिसने भी इसे अपने पास छिपा रक्खा होगा वह बहुत ही सावधान होगा, यदि कोई इसके साथ पकड़ा गया तो उसे मृत्यु दंड तक हो सकता है। चाहे वो डयूक स्टीफन ही क्यों न हो।"

इतना कह कर जोरो ने ठंडी सांस ली।

"अच्छा" वह बोला "मैं तुम्हें बता चुका, मुझे कुछ मालूम नहीं, तुम मेरी सहायता कैसे कर सकते हो परन्तु मैं केवल उम्मीद करता हूँ तुम कर सको, कैसे भी। इसीलिये जब मुझ से किसी ने कहा अपने दोस्तों को ताजपोशी के लिये आमन्त्रित कर लो, तो मैं तुरन्त सहमत हो गया। अब तुम यहाँ पहुँच ही गये हो। परन्तु किसी को मालूम नहीं है कि तुम जासूस हो और ये किसी को पता चलना भी नहीं चाहिये। तुम जो कुछ भी करो, बस अच्छे भारतीय लड़कों के समान ही व्यवहार करना, "जोरो ने उनके मुँह देखे "क्या ख्याल है, क्या तुम मेरी मदद कर सकोगे?"

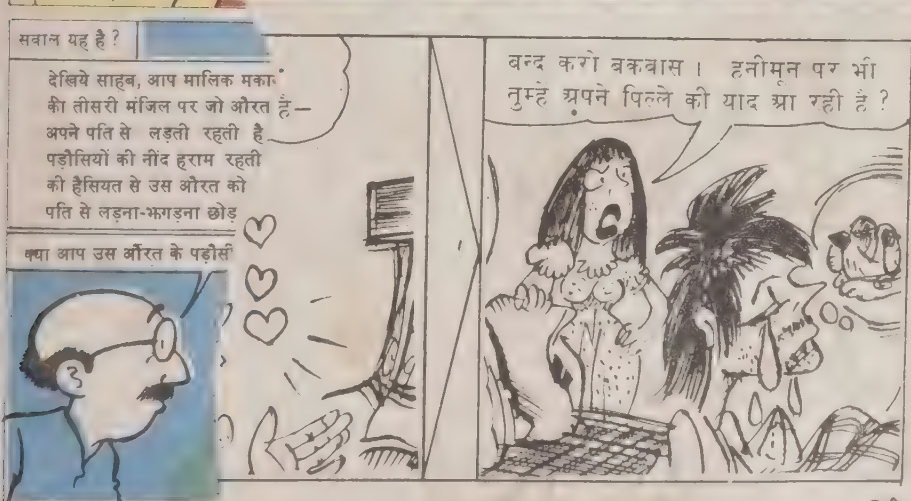
"मै कह नहीं सकता," राजू ने ईमानदारी से कहा "एक छोटी सी चाँदी की मकड़ी जिसे कहीं भी छिपाया जा सकता है को ढूंढ़ना वास्तव में बहुत ही कठिन है। परन्तु हम प्रयास अवश्य करेंगे। परन्तु सबसे पहले **हमें वह स्थान देखना है जहाँ से वह चुराई गई है तथा वह** कैसी है। तुम कह रहे थे **कि उसके स्थान पर नकली मकड़ी रक्खी है**"

"हाँ! एक बहुत अच्छी नकल है, परन्तु है नकल ही। आओ, हम तुरन्त ही वहाँ चलते हैं और मैं तुम्हें अपने स्मृतिचिह्नों के कमरे में ले चलता हूँ।"

तीनों लड़कों ने अपने कैमरे उठाये और जोरो उन्हें पत्थर के गलियारे से ले चला। **कुछ घुमावदार सीढ़ियों से हो कर वे नीचे**

शेष पृष्ठ २४ पर

बन्द करो बकवास



सवाल यह है?

कि जवाब कितना लाजवाब है ?





ऐसे ही कुछ और लाजवाब सवाल देखिये, आगामी अंक में।

पृष्ठ २१ से आगे

एक और कुछ चौड़े गलियारे में पहुँचे। दीवारें, फ़र्श तथा छतें सब पत्थर से बनी थीं।

''ये महल तीन सौ साल पहले बना था,'' जोरो ने इन्हें बताया, ''महल की नींव तथा दीवारें एक पुराने महल की हैं जो यहाँ था। यहाँ दर्जनों खाली कमरे हैं वास्तव में ऊपर की दो मंज़िलों में तो कभी कोई जाता ही नहीं। तरानिया एक ग़रीब देश है तथा इतने बड़े महल को खोल कर उसका रख रखाव करने लायक़ नौकर रखना हमारे लिये सम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त आधुनिकरण किये हुए कमरों के अतिरिक्त यहाँ कोई कमरा गर्म नहीं है। और महल के अधिक भाग का आधुनिकरण हम कर नहीं सकते। सोचो ज़रा बिना गर्मी के यहाँ रहना कितना कठिन होगा।''

इसका अनुमान लड़के बख़ूबी से लगा सकते थे क्योंकि इस समय अगस्त के माह में भी जोरों का महल अन्दर से बहुत ठंडा था।

''इस महल में पुराने महल के तहखाने और कोठरियाँ हैं जिनमें गुप्त राहों से जाया जा सकता है,'' जोरो ने बताया, ''यहाँ तक कि इन पुरानी गुप्त राहों में मैं भी खो सकता हूँ यदि मैं अपने प्रयोग में आने वाले भाग से दूसरी ओर निकल जाऊँ।''

वह जोर से हँसा और बोला वीभत्स तथा डरावनी फिल्म बनाने के लिये बहुत ही उपयुक्त है। भूत गुप्त रास्तों से तहखानों के अन्दर बाहर आते जाते अनोखा प्रभाव दिखायें। भाग्यवश हमारे यहाँ भूत नहीं हैं। ओह! वो बोला ''ये डयूक स्टीफन आ गये''।

जैसी ही निचले गलियारे में पहुँचे एक लम्बा आदमी तेज़ी से इनकी ओर आया। उसने झुक कर जोरो का अभिवादन किया।

''नमस्कार, जोरो,'' वह बोला, ''क्या ये तुम्हारे भारतीय मित्र हैं?''

उसका स्वर रुखा तथा औपचारिक था। वह स्वयं एक भाले के समान सीधा था जिसकी काली नीचे को गिरी मूँछ थी तथा बाज के समान नाक था।

''नमस्कार डयूक स्टीफन,'' जोरो ने उत्तर दिया। ''हाँ, ये मेरे भारतीय मित्र, मैं इनसे आपका परिचय करवाता हूँ, राजू माथुर, महिन्दर सिंह और ये हैं श्याम नरायण, ये सब ही भारत के सुन्दर नगर के हैं।''

लम्बे आदमी ने हर नाम के परिचय पर एक इंच के करीब अपना सिर हिलाया, उसकी तेज़ आँखें उनका बड़े गौर से निरीक्षण कर रही थीं।

''तरानिया में स्वागत करता हूँ,'' उसने उसी औपचारिक और रुखे स्वर में कहा। ''तुम अपने मित्रों को महल दिखा रहे हो?''

''हम स्मृतिचिह्नों के कमरे में जा रहे हैं, इन्हें हमारे देश के इतिहास में दिलचस्पी है। ''डयूक स्टीफन हमारे देश के प्रतिशासक हैं, मेरे पिता की शिकार दुर्घटना में मृत्यु हो जाने के बाद से ही, देश का शासन चला रहे हैं।''

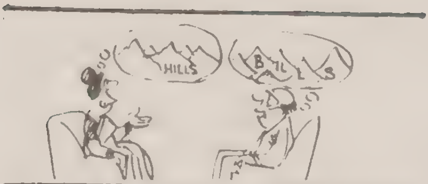
''युवराज, तुम्हारे नाम में,'' डयूक स्टीफन जल्दी से बोले। ''और आशा है तुम्हारी भलाई के लिये, मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। ये स्वभाविक ही है कि मैं आपके मेहमानों का आदर करूँ।''

''बहुत अच्छा,'' जोरो बोला, हालाँकि तीनों जासूस जानते थे कि ये बात जोरो बिलकुल पसन्द नहीं कर रहा था। परन्तु मैं तुम्हें तुम्हारे कर्तव्य से अधिक देर तक गैरहाज़िर नहीं रखना चाहता। मेरे ख्याल आज तुम्हारी कौंसिल की मीटिंग है डयूक स्टीफन?''

''जी हाँ', उस आदमी ने इनके साथ आते हुए उत्तर दिया ''आपके राज्यभिषेक के

विषय में बातचीत करने के लिये, जो शुभ कार्य दो सप्ताह में होने वाला है। फिर भी कुछ क्षण मैं आपके साथ रह सकता हूँ।''

जोरो ने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया, वह इन को गलियारे से एक बहुत बड़े कमरे में ले गया इस कमरे की छत दो मंज़िल की ऊँचाई पर थी। दीवारें तस्वीरों से भरी थीं और बहुत से शीशे के केस कमरे में भरे थे इनमें प्राचीन झंडे, ढालें, मैडल या तमंचे किताबें तथा अन्य स्मृतिचिह्न थे। हर केस में एक सफ़ेद कार्ड पर सुन्दर साफ़ तरीक़े से उसके विषय में लिखा था। लड़के एक टूटी तलवार रखे केस के भीतर झाँक रहे थे उसमें रक्खे कार्ड पर लिखा था कि ''ये प्रिंस पॉल की वह तलवार है जिससे उन्होंने सन् १६९८ के विद्रोह का सफल दमन किया था। ''यहाँ इस कमरे में', डयूक स्टीफन बोले हमारे देश का संक्षिप्त इतिहास है''। परन्तु हमारा छोटा देश है और हमारा इतिहास रोमाँचकारी इतिहास रहा है। तुम्हें



हम पुराने तौर तरीके वाले तथा अजीब लोग लगते होंगे क्योंकि तुम लोग भारत जैसे बड़े देश से आये हो।''

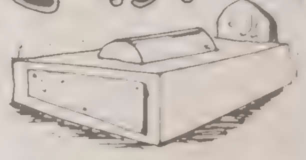
''नहीं श्रीमान्'', राजू ने नम्रता पूर्वक कहा ''अभी तक हमने जो कुछ आपके देश का देखा है, उससे आपका देश बहुत ही आकर्षक प्रतीत होता है।''

''आपके देश के बहुत से व्यक्ति, हम लोगों को बहुत अनउपयोगी और पिछड़े हुए समझते हैं। मै आशा करता हूँ कि हमारी धीमी गति आप लोगों को बोर नहीं करेगी। कृपया अब आप मुझे क्षमा करें, मुझे कौंसिल की मीटिंग में भाग लेना है।''

वह मुड़ा और चला गया।

क्रमशः

आविष्कारकों के मकबरे

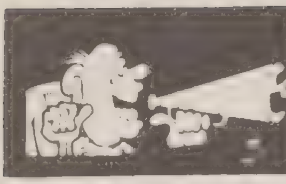


प्रायः लोग अपने मकबरों में अजीब २ बातें लिख छोड़ जाते हैं। यदि आविष्कारकों के मकबरे ऐसे बनायें जायें जो मनोरंजक ढंग से उनके जीवन के कार्यों पर प्रकाश डालें तो कब्रिस्तान भी दर्शनीय स्थल बन जायें। कुछ आविष्कारकों के ऐसे मकबरों की कल्पना:




एलेक्जेंडर
ग्राहम बेल
जन्म - 1845
२२जून-1881 को
भगवान के यहाँ
से उनके लिये
कॉल आ गया
टेलीफोन
आविष्कारक
गलती से उनका शरीर कब्रिस्तान में गलत नम्बर के प्लॉट पर दफनाया गया।
व्लादीमीर
जोरीकिन
जन्म- - १९२५
२५- १९२५
को हृदयगति
में रुकावट के
लिये खेद है
टी वी के आविष्कारक
जॉन पी
पनडुब्बी के आविष्कारक

शेष पृष्ठ ३० पर



आपस की बातें

चचा वातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

उमेश ज्ञानचंदानी, प्रेमी, बिलासपुर : दीवाना का हीरो चिल्ली है, तो हीरोईन कौन है?

उ० : वह भी चिल्ली है। फिल्मों में कलाकार डबल रोल करते हैं, पर दीवाना का चिल्ली एक ही समय में हज़ारों रोल करता है।

के०पी० अरोड़ा, काशीपुर : नीरस ज़िंदगी को रंगीन किस प्रकार बनाना चाहिये?

उ० : रंगीन मिज़ाज बन कर। वैसे हम तो अपनी नीरस ज़िंदगी को गन्ने का रस पी कर "रसीला" बना लेते हैं।

अनिल दुर्गा सिकन्दर, रायपुर : चाचा जी, आप के सर पर चाची ने आज तक बेलन के कितने वार किये हैं?

उ० : इसका कोई हिसाब नहीं, क्योंकि जिस ज़माने में उन्होंने यह शौक़ फर्माना शुरू किया था, उस जमाने में कैल्कूलेटर नहीं बने थे।

एम०एस० गुजराल, माडल टाऊन करनाल : चाचा जी, हुस्न और सुन्दरता में क्या अन्तर है?

उ० : जो अंतर "बैंगन" और "बताऊं" में है।

चरनजीत, भजनपुरा, शाहदरा—दिल्ली : अगर पत्नी अपने पति को देवता मानती है तो वह मन्दिर क्यों जाती है?

उ० : हमारे यहां एक नहीं अनेक देवता हैं, छोटे देवता, बड़े देवता, एल० डी० सी० देवता, यू० डी० सी० देवता, अफ़सर देवता और वी० आई० पी० देवता। एक ही देवता से क्या बनता है साहब।

रवि भाटिया, शंकर रोड मार्केट, दिल्ली : औरत की सब से बड़ी कमज़ोरी क्या है?

उ० : भारी मेज़ें और कुर्सियां उठा कर फैंकने में असमर्थ होना और केवल बेलन ही से काम चलाना।

नरेन्द्र गुलाटी, शहजादा, लुधियाना : अंकल जी, लोग कहते हैं प्यार से अगर कोई ज़हर भी पिलाये तो अमृत बन जाता है। क्या यह सत्य है?

उ० : पता नहीं सत्य क्या है। मीरा को तो राणा ने प्यार से नहीं, नफ़रत से ज़हर पिलाया था। और हमारी सुनिये—कल हमारा गला ख़राब था। हमारी श्रीमति जी ने हमें नफ़रत से शहद चटाया। पर वह ज़हर नहीं बना।

विनोद पुरी, अशोक पुरी, सुशील पुरी, लुधियाना : मनुष्य जीवन में धोखा दूसरों से खाता है या अपनों से?

उ० : इस प्रश्न के उत्तर के लिए एक शेर अर्ज़ है:

अपनों की बेवफ़ाई पर हम देर तक रोये,
शहरे वफ़ा में जब कोई बेगाना मिल गया।

विपन कनोजिया, लुधियाना : चाचा जी, मेरा छोटा भाई बहुत गालियां निकालता है। क्या करें?

उ० : बड़ा हो कर उसके नेता बनने का इंतजार करें।

रमेश सोजरानी, अमरावती : सच्चे मित्र की पहचान कब करनी चाहिये?

उ० : जब आप मित्र खोने के मूड में हों।

हरीश बहल, लुधियाना : वह कौनसा फूल है जो भगवान के चरणों में नहीं चढ़ाया जाता?

उ० : फ़स्टअप्रैल फूल।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

मदहोश


एक बेरहम इंसानी पजा मासूम उल्लू के बच्चे को दबोचने वाला है।
ख़बरदार जो हाथ आगे बढ़ाया। बोतल मार कर तोड़ दूंगा। जानता नहीं आजकल वन्य पशु-पक्षी सप्ताह मनाया जा रहा है।
मदहोश होश में आ !
मैं अपना पर्स खोलने जा रही हूं या किसी का गला दबाने. जरा आंखों में ठंडे पानी के छींटे मार कर गौर से देख !

पृष्ठ २७ से आगे


फोटोग्राफी के आविष्कारक लुई डागेर की कब्र पर जुड़वां मकबरे . . .
पॉज़िटिव
नैगेटिव
तार के आविष्कारक हवाई जहाज के आविष्कारक
F.B.MORSE
BORN 9/7.120
DIED 8/800-73
14-25.
अलवर राइट
विल्बर राइट
जन्मः . . .
उनके शरीर यहाँ हैं परन्तु प्राण पखेरू उड़ गये
माचिस के आविष्कारक
RIP
(श्रद्धाञ्जली के रूप में कब्र पर फूलों की जगह जली हुयी तीलियां रखें। कब्र पर पत्थर के दो ओर माचिस का मसाला लगा हो)

कुत्तों से सावधान

यहां के कुत्ते पैसे उधार मांगते हैं

दीवाना

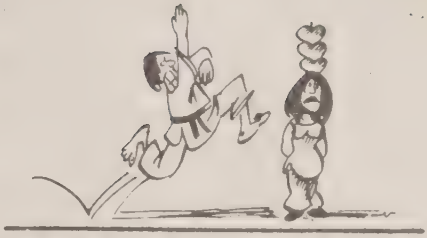
महिला टैनिस खिलाड़ी और उनके सैक्स संबंध

पिछले दिनों एक घटना ने टैनिस क्षेत्रों में तहलका मचा दिया। प्रसिद्ध खिलाड़ी बिली जीन किंग की एक भूतपूर्व सैक्रेटरी जिम बारनैट ने बिलीजीन पर दावा किया। बारनैट अब अपंग है। वह बिली जीन से जीवन यापन का खर्च मांग रही है। उसका कहना है कि बिली की जब वह सैक्रेटरी थी बिली उस पर आसक्त हो गयीं थी। उन दोनों में समलैंगिक सैक्स सम्बन्ध स्थापित हो गये थे। इस प्रेम काल के दौरान बिली ने उसे जीवन भर का खर्च और कोठी देने का वचन दिया था। बिली जीन किंग ने प्रतिवाद किया कि उसने बारनैट को ऐसा कोई वचन नहीं दिया था परन्तु प्रेस सम्मेलन बुलाकर बिली ने अपने माता-पिता व पति के सामने ही स्वीकार किया कि मिस बारनैट से उसके अप्राकृतिक सैक्स सम्बन्ध रह चुके हैं। इस स्वीकारोक्ति ने सबको चौंका दिया।

बात यहीं समाप्त नहीं हुयी भानुमति का पिटारा खुल ही गया तो और चौंकाने वाली बातें भी सामने आयीं। अमरीका की किशोरी खिलाड़ी ट्रेसी ऑस्टिन की मां ने घोषणा की कि वह हमेशा ट्रेसी के साथ रहेगी। ट्रेसी का कहना है कि सीनियर महिला टैनिस खिलाड़ी उस पर डोरे डालने की कोशिश करती हैं। एक पेशेवर 18 वर्षीय दक्षिण अमरीकी टैनिस खिलाड़ी ने तो रोते हुये बताया कि खिलाड़ियों के लिये बने ड्रैसिंग रूम में चोटी की खिलाड़िनें आपस में अश्लील छेड़-छाड़ और चूमा-चाटी करती है। सबके सामने कम आयु की किशोरी टैनिस खिलाड़िनों पर सीनियर खिलाड़िनें गुण्डागर्दी की हद तक दबाव डालती हैं कि वह भी आत्म समर्पण करके उनकी प्रेमिका बन जायें। उसका कहना है कि जब वह अपने पुरुष मित्र से मिलने जाने की तैयारी करती हैं तो सीनियर खिलाड़िनों उसकी खूब खिल्ली उड़ाती हैं। व्यंग्य से कहती हैं, कहां चली इतनी सजधज के? एक लड़केकेलिये! अरे हम क्या बुरे थे जो बाहर जाने की जरूरत आ पड़ी।

इसके पीछे एक मनोवैज्ञानिक कारण भी है। पुरुष खिलाड़ी जहां कहीं भी हों किसी भी युवती से प्रेम सम्बंध स्थापित कर लें कोई कुछ नहीं कहता। यदि महिला खिलाड़िनें उसी प्रकार युवकों से मिलें तो एक तो उनके अहं को ठेस लगती है दूसरे लोग अंगुलियां उठाते हैं व अखबार-पत्रिकायें कालम के कालम मसाला डालकर रंगना शुरू कर देते हैं। मित्र, रिश्तेदारों में भद्द होती है। घर-घर वे आपस में ही एक-दूसरे का सहारा लेती हैं। सारा दोष पुरुष प्रधान समाज का है जहां सारे नियम, कानून व मानसिकता पुरुषवर्ग की श्रेष्ठता कायम रखने व उनके हितों का पोषण करने के लिये हैं।

क्यों और कैसे



प्र० : हिरनों के सींग क्यों झड़ते हैं ?

उ० : हिरन शाकाहारी जीव है जो फूल, पत्ती, पेड़ों की छाल और पानी में उगने वाली वनस्पतियों का भोजन करते हैं। यह अधिकतर संकोची जीव होता है जो अपनी सुरक्षा के लिये अपनी गति पर निर्भर होता है। यह प्रायः रात को भोजन करते हैं। इनकी दृष्टि बहुत तेज़ होती है साथ ही सुनने की शक्ति भी बहुत तीखी होती है इसी कारण ख़तरे का आभास इन्हें बहुत जल्दी हो जाता है। हिरन कई प्रकार के होते हैं. छोटे पुडु हिरन केवल एक फुट ऊँचे होते हैं तथा विशाल मूस हिरन लगभग १००० पाऊँड वजन का होता है।

हिरनों को इनके सींगों से पहिचाना जाता है। लगभग हर प्रकार के नर हिरनों के सींग **होते हैं। तथा केरीबू और रेनडियर हिरनों की मादाओं के भी सींग होते हैं।** हिरनों के सींग अन्य पशुओं के समान खोखले नहीं होते, अपितु इनकी बनावट मधुमक्खी के छत्ते के समान होती है। हर वर्ष वसन्त ऋतु में नर हिरनों के नये सींग उगते हैं और हर वर्ष शीतकाल में संगम ऋतु के बाद, इनके सींग गिर जाते हैं। कुछ हिरनों के एक ही सींग उगता है तो कुछ नस्लों के एक सींग की ग्यारह शाखायें हो जाती हैं। इन्हें ही बारहसींगे के नाम से जाना जाता है। आयु के साथ भी सींगों की शाखाओं की संख्या बदलती रहती है और इनके सींगों को देख कर इनकी आयु बताई जा सकती है।

पहले वर्ष में हिरन के सिर पर केवल दो गाँठें सी उगती हैं उन्हें वृन्तक कहते हैं। ये हिरन के सींग झड़ने के समय भी ऐसे ही रहती हैं। हर वर्ष सींग वृन्तक के ऊपर से झड़ते हैं और नये सींग बसन्त ऋतु में इन पर ही उगते हैं। दूसरे वर्ष में वृन्तक से एक सीधा सींग उगता है और तीसरा वर्ष होने पर ही इसमें से शाखायें निकलनी आरम्भ होती हैं।

सींग उगने के समय इन पर एक प्रकार की मखमली अति संवेदी त्वचा चढ़ी रहती है। यह त्वचा रक्त नाड़ियों से भरी होती हैं जो सींगों को भोजन पहुँचा कर हड्डी बनाती हैं। दो से चार माह में जब सींग पूरी तरह बढ़ जाते हैं तो सींग के निचले भाग पर एक छल्ला सा उभर कर आता है और सींगों की त्वचा का रक्त प्रवाह बन्द हो जाता है। और यह त्वचा धीरे-धीरे सूख कर झड़ जाती है। इस त्वचा को हिरन अपने सींग पेड़ों के तने से रगड़ कर भी हटा देते हैं।

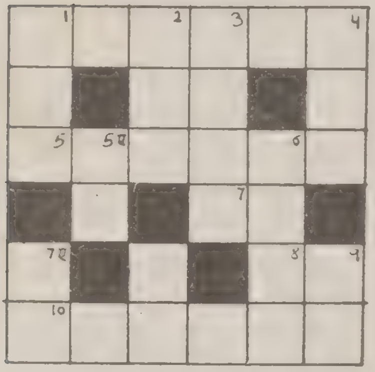
क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग.
नई दिल्ली-११०००२.


एक रोज चेले ने बैंक की वैन पर डाका डाला।
EYE BANK
फूटी किस्मत
आज मोटा हाथ मारा है मैंने अकेले ही बैंक की वैन लूट कर। गुरु मेरा कमाल देखेगा तो दंग रह जायेगा।
दूसरी ओर गुरु ने भी एक बैंक वैन पर हाथ साफ कर दिया।
D BANK
चेले के बस का तो कुछ भी नहीं. मैं अकेला ही बड़े-बड़े बैंक लूट सकता हूं। चेला आज मेरा लूट का माल देखेगा तो उसकी आंखें खुली की खुली रह जायेंगी।
बैंकों की वैन लूट कर चेला और गुरु अपने खुफिया ठिकाने पर पहुंचे।
आज वह हाथ मारा है गुरु, कि मेरी लूट का हिसाब लगाते लगाते तुम बूढ़े हो जाओगे।



इन फूटी किस्मत वालों से आगामी अंक में फिर मिलिये।

दीवाना वर्ग पहेली



इनाम १० रू.

बायें से दायें

१. बीच में सर वाला मौका परस्त। (६)
५. ऐसा होने पर सिर झुक जाता है। (६)
७. वह नहीं बल्कि जो सामने है। (२)
८. दिखा जलवा में एक उठने वाली चीज है। (२)
१०. प्रेमी-प्रेमिका का खेल जोड़ तोड़ का। (३-३)

ऊपर से नीचे

१. दिल न हो तो शांति है ! (३)
२. सिर कटे तो गीला बीच कटे तो बराबर ऐसा है प्रियजन ! (३)
३. इस तरह स्याना भेद छुपाये है। (४)
४. दीवान के सिरे पर लगे कीड़े जो उल्टी ओर से ज्यादा नहीं हैं। (३)
५.-ए. तरबूज ने क्या छोड़ा ? (२)
६. सबसे नीचे की कोठरी जहाँ पत्तों में भोजन है। (४)
७.ए. फार्मूले वाला उस्ताद। (२)
९. आज नारी ने पैदा किया। (२)

अन्तिम तिथि:- १ अगस्त १९८१

अंक नं. ९ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

अ	श	व	ली	■	शा
ग्र	■	शी	ना	श	य
ज	ली	य	■	ख	शी
■	ल	ता	ड़	■	क
श	जा	■	ल	की	र
ई	ना	म	■	मा	ना

विजेता :- इन्द्र पाल
C-३९ तरूण मार्ग
तिलक नगर, जयपुर-302004

अंक नं. १० में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

स्वर पतवार

विजेता:
नवनीश मुन्जाल
लार्ड कृष्णा गली
मॉडर्न मार्किट के पास
अलख सागर रोड
बीकानेर


सिलबिल-पिलपिल
वर्ग पहेली
भाग-2
पिछले अंक में आपने पढ़ा कि सिलबिल पहेलियां भर कर पैसे कमाने की योजना बनाता है। पहेली के एक संकेत 'हसीना जवानी में कम खाती है या गम खाती है ?' का जवाब उसे ढूंढ़े नहीं मिलता। आखिर वह फैसला करता है किसी हसीना से ही पूछा जाये। अतः एक लड़की को गली में चाकू की नोक पर रोक लेता। उससे आगे……
लड़की, तुझे पता है मैंने तुझे क्यों रोका है ?
म म मैं क्या जानू ? शायद तुम मेरा अपहरण करना चाहते हो। फिर मेरे मां-बाप से फिरौती की मांग करोगे। मैं कहे देती हूं कि मेरे बाप अमीर नहीं हैं। आपको गलती हो रही है।
बोले सो निहाल सत सिरी अकाल !
ओये बदमाश, लुच्चे लफंगेया, तुम सरदार पेचकस सिंह के होन्देयां मां बहन नाल इस तरह की गल्ला कर रहे हो। जे तुमने अपनी मां का दुध पित्ता होया है और अपने खेत्ता दा गन्दलां दा साग अत्ते मक्की दी रोटी ठंडी ठार लस्सी नाल खांददा है तां मेरे नाल पंजा लड़ा। एक कुड़ी नू रौब दखाँदा पैया।
ओ भापा जी तुस्सी कमाल कर रहे हो। न गल न बात मैं कोई गलत कम्म कर रहयां ? मैं तां अपने इक सवाल दा जवाब मांगदा पैया।
किहां दा जमाना आ गया ऐ !



कोई किसे तों कोई गल पूछे तां उन्नू जवाब मिलना चाहिदा कि नहीं। ओ मैं तेन्नू भगा के कड़ा फगवाड़े लै जाना ई। ठीक है कि नहीं गल ?
ओये भले मानस, स्वाल पुच्छन लयी हत्थ विच चकू फड़ीदा है ? ऐ दस्स तू पुच्छ की रहया है ?
दोनों पागल हैं।
ऐ लो ! सीधी तरहाँ आजकल कोई गल दा जवाब देंदा ई ? पता नहीं किहां दा जमाना आ गया ऐ
वर्ग पहेली हल करने लयी मैंन्नू जवाब चाहिदा कि हसीना जवानी में कम खाती है या गम खाती है। पिचत्तर हजार रुपए का इनाम है।
ओ कुक्कडा तू सच कह रहया ऐ ?
अगर ऐ गल सच्ची है तो आजफ्फी पा लइये। तू मेरा भ्रा है। सगा भ्रा। ओ तेरे नाल मिलकर हमें बहुत खुशी हुयी। मैं कभी कनाडा जाऊंगा तो, तुमको भी साथ ले जाऊंगा।
कनाडा ?
अजीब पागलों से पाला पड़ा है। अब यह दोनों एक दूसरे के कंधे पर सर रख कर रोने लगे हैं। ऐसे में मैं भाग जाऊं तो इनको पता भी नहीं लगेगा। लेकिन नहीं।
भापा जी कनाडा ? मेरे कलेजे बिच छुरी मार दो हम यहां इंडिया में सोने सी जवानी मिट्टी में रोल रहे हैं। की ?
सच्ची गल ऐ। ओये मैंनू तो ओ ट्रेवल एजेंट दा पुत्तर धोखा दे गया। मैं लुध्याने अपने जमीन बेच के आया सी।
मत रो छोटे भाई। अभी तेरा बड्डा भ्रा जिऊंदा ऐ।


ओ कुक्कड़ी मैं तां आप वर्ग पहेली भर रहया सी। हम को भी एक स्वाल का जवाब चाहिदा सी। इसलिए तो सड़क पर घूम रहा था। मेरा स्वाल है लडकी अंधेरे में चाकू देखकर डर जाती या डाकू देखकर डर जाती है ?
आपको तो अपने स्वाल का जवाब मिल गया।
कित्थे मिलया ओये ?
मैं इस लड़की को चाकू नहीं दिखा रहा था ? देखा था कैसे डर गयी थी ?
सही गल है। ओ तू नां काका बड़ा होशियार है। हैं की ?
आपने पहले क्यों नहीं बताया कि आपको वर्ग पहेली के स्वाल का जवाब चाहिए ?
मेरे साथ चलो।
तुमको जवाब आता है ? हसीना जवानी में कम खाती है या गम खाती है ?
हसीना तो मेरी सहेली है। वह यहीं बल्ली मारां में रहती है।
वो मारा पापड़ वाले को ! हसीना तुम्हारी सहेली है ?
हां उसी से जाकर जवाब पूछते हैं।
हसीना यह अंकल गिरपिट हैं।
गिरपिट नहीं सिलबिल
यह वर्ग पहेली भर रहे हैं इनको ७५००० रुपये का प्रथम पुरस्कार मिलेगा तो हम दोनों को किसी नयी पिक्चर का प्रीमियर शो दिखायेंगे। यह फिलहाल एक स्वाल का जवाब ढूंढ़ रहे हैं जिसे शायद तुम हल कर सको। हसीना जवानी में कम खाती है या गम खाती है ?


हसीना, बस मुझे यह बता दो कि तुमने जवानी में गम खाया या कम खाया ?
इस सवाल का जवाब मैं कैसे दे सकती हूं ?
क्यूं ? तुम्हें पता नहीं लगता कि तुम क्या खा रही हो ? कम खा रही हो या ज्यादा ।
अभी जवानी आने में देर है ।
देर है ? कोई बात नहीं मैं एक दो घंटे बाद फिर आऊंगा । तब तक तो आयेगी ।
मेरी उम्र इस समय १८ साल है पांच साल बाद जवानी आयेगी
पांच साल !
देखिये साहब, मैंने तो अपनी तरफ से आप की पूरी हैल्प की, लेकिन आपकी किस्मत ही खराब थी । पहेली देने वालों की भी गलती है जब हसीना अभी जवान ही नहीं हुयी तो स्वाल कैसे पूछ रहे हैं ?
अच्छा तुम जाओ ।
यह पब्लिक के साथ हेराफेरी हो रही है गलत तरह के स्वाल पूछकर इनाम का सारा पैसा आयोजक हड़प कर रहे हैं ।
मैं इनको इस तरह नहीं छोडूंगा भयानक बदला लूंगा ताकि वह उम्र भर याद रखें ।
आयोजक के बच्चे, तूने पब्लिक से बहुत से स्वाल पूछे । आज मैं तुझे एक पहेली हल करने के लिए दूंगा ।
धांधली वर्ग पहेली
मैं यह बम तेरे टेबल के नीचे फेंक रहा हूं तुझे यह स्वाल करना है, बम फटने पर तेरी आंखें पहले बाहर निकलेंगी या आंतें ?
नहीं तुम पागल हो ?

पृष्ठ १० से आगे

शत प्रसन्न और प्रफुल्लित थे। 'फिर उदासी लाई कैसे जाए? ताकि फार्मूले का भरपूर सदुपयोग हो सके।'—वह विचारते हुये माथे पर हाथ रखकर गंभीरता से बैठ गए।

बड़ी देर बाद, साहब की मेहनत रंग लाई यानी कि वह उदास हो गये, बेहद उदास। कारण यह था कि साहब को सोचते-सोचते, उस कटीले नयनों वाली लड़की की याद आ गई, जो आंखें मटका-मटका कर आलू, मटर, टमाटर बेचा करती थी। सब्जी लेने के लिये, वह प्रतिदिन उसी के पास पहुंचते थे। बल्कि अपलक दृष्टि से उसका चेहरा ही ताकते रहते और सोचते जाते कि इसी से यदि विवाह हो जाता तो जीवन में रंग की नदियां बहती होतीं। यह बात अलग थी कि साहब के इस दीवानेपन का हाल देखकर, सब्जी वाली पांच सौ ग्राम की जगह ढ़ाई सौ ग्राम ही सब्जी देती।

इसी उदासी में साहब, जब फुर्तीसिंह जी के समक्ष पहुंचे तो फुर्तीसिंह जी उनका मुहर्रमी चेहरा देखकर बोले, लगता है, श्रीमती जी के वियोग में उदास हैं'। 'नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं है, सुस्तराम जी···' उन साहब ने बड़ी हिम्मत के साथ, उनके पास आने के मकसद की शुरूआत की ही थी कि फुर्तीसिंह जी के पीले मुंह पर खून का उबाल इस कदर आया कि चंद पलों में ही गुस्से से लाल टमाटर हो गये।

'क्या आपके बाप का माल खाता हूं जो आपने मेरा नाम बिगाड़ने की जुर्रत की या फिर आप दोनों आखों के अंधे हैं जो मुझ जैसा सदा क्रियाशील रहने वाला प्राणी आपको सुस्तराम दिखाई पड़ता है समझा था बीवी से डरने वाले एक निहायत शरीफ आदमी होंगे आप पर आपने तो अपनी सभ्यता की पहचान एक शब्द कहकर ही करवा दी सच बताइए इस मुहल्ले में किस-किस से दोस्ती कर रखी है आपने··· ठीक-ठीक आपकी दोस्ती उस कम्बख्त बिगड़ू से हो गयी है, हैं न?' फुर्तीसिंह जी एक सांस में जितना बोल सकते थे, बिना पूर्ण विराम, अर्द्धविराम के बोलते चले गए। गुस्सा तो सातवां आसमान भी पार कर गया था। आखिरी वाक्य उन्होंने लगभग डांटते हुए कहा।

नये साहब की तो हालत ही पतली हो गई, यह सुनकर, कांपते हुए बोले. 'हां, उसी नामुराद बुड्ढ़े ने ही मुझसे ऐसा कहने को कहा था।' सारी मौज-मस्ती हवा हो चुकी थी, साहब की। पल-पल यही डर था कि फुर्तीसिंह जी अपने हाथ का कोई लोहा-लंगड़ न मार दें।

शेष पृष्ठ ४५ पर



फैण्टम-जंगल शहर
इस दरवाज़े पर पहरा दो, डरपोक। मैं लुआगा को स्वयं खत्म करूँगा . . . फिर फैन्टम को खत्म करूँगा।
खाली ! वह भाग गया।
मुझ से काम चलेगा, जनरल ?
!
FALK & BARRY 1/4
जैसे ही जनरल अपनी पिस्तौल उठाता है . . .
आखिरकार हमने तुम्हें ढूंढ़ ही लिया, और अब मैं तुम्हें समाप्त करता हूँ
गलत ! जनरल . . .
FALK & BARRY 1/5
फैन्टम दृष्टि से भी अधिक तेज़ी से कार्य करता है, जंगल की पुरानी कहावत।
!!
मैं तुम्हें समाप्त करता हूँ।
जैसे ही फैन्टम बाबाबू की रिवाल्वर पर वार करता है . . .
!
कोई भी मनुष्य ऐसे वार नहीं कर सकता, केवल एक भूत ही कर सकता है, मदद !
जनरल जाओ मत, अभी तो तुमसे बातें करनी हैं !
ऊँह !
भड़ाम !
FALK & BARRY 1/7
मैं बहुत दिन से तुम से दुबारा मिलने की प्रतीक्षा में था, बाबाबू !
!
1/8
फैन्टम की रिवाल्वर पेटी में देख कर, वह घूमता है . . .
तुम . . . बदमाश !
शुक्रिया बाबाबू, मेरा जी चाहता था कि तुम यह करो !
बाबाबू की गलती !


राष्ट्रपति लुआगा, आपके सुरक्षा अधिकारी आपका इस छत पर होना पसन्द नहीं करेंगे !
मेरी रिपोर्ट न करना !
बाबाबू का क्या हुआ ?
वह आपकी प्रतीक्षा कर रहा है अपने षडयन्त्रकारी साथियों सहित !
जनरल, मेजर और लैफ्टीनेन्ट को सैल्यूट करना चाहिये परन्तु लाचार हैं।
तुमने तो कमाल ही कर दिया !
आह ! मेरा जबड़ा . . .लगता है टूट गया।
जेल का डाक्टर उसे देख लेगा बाबाबू !
उन दोनों का क्या हुआ, जिन्होंने मेरा अपहरण किया था ?
जब उन्हें होश आये, उन से ही पूछना !
अब हम यहाँ से निकलेंगे कैसे, बाबाबू के सिपाही चारों और हैं ?
छोटी सी बात है, हम इसका हाल निकाल लेंगे।
तुम सब बातों को कितना आसान बना देते हो, क्या मैंने कहा था, तुम अद्भुत हो ?
प्रिंस अगोरडा, नकाब वाले आदमी का कहीं पता नहीं है !
हमने देखा नहीं !
जनरल बाबाबू के पास रिपोर्ट पहुँचाओ।
वह . . .यहाँ है !
सिपाहियों इन्हें पकड़ लो !
रुक जाओ, बेवकूफ राजा, तुम्हें मेरे सिर के निकट बन्दूक नहीं दिख रही !
उसे इसकी परवाह नहीं है बाबाबू, यह उसका सिर थोड़े ही है।
स्वागत फैन्टम। चलते फिरते भूत, पूर्वीय अंधेरे के रखवाले !
स्वागत ! बाम्बसी के बहादुरों !
इन्होंने हमें तुम्हें मारने का हुक्म दिया था, हमने इन्हें बताया, तुम हमारे मित्र हो !
यह दुष्ट आदमी है, तुम चाहते हो हम इस पर गोली चला दें ?
!!
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved



जनरल बाबाबू ! फैसला कानून करेगा।
और ये दो विश्वासघाती !
करोटा, रामोस तुमने मुझ से विश्वासघात क्यों किया ?
बाबाबू ने मुझे रक्षा मंत्री बनाने का वचन दिया था !
नहीं ! वह वचन तो उसने मुझे दिया था !
क्या इन तीनों को एक ही कोठरी में बन्द किया जा सकता है ? वहीं यह लोग इसका निर्णय कर लेंगे !
!!!
बहुत बढ़िया विचार है !
इस समय कहीं भी नहीं हैं ! यहाँ से कैसे निकला जाये ?
सरल है राष्ट्रपति, हमारी टैक्सी प्रतीक्षा कर रही है।
एक प्रदीप्ति !
उसका अर्थ है अब नीचे उतर आओ। यह उसने कैसे किया ? या यह भी मेरे लिये कोई जाल है ?
ठीक है, वह गया !
वह अब राष्ट्रपति के साथ है, अब सब ठीक है, वाह !
आपका चालक तथा आपका यान !
बहुत खूब !
प्रिंस अगोरडा तुम तो मेरे राष्ट्रपति पद की शपथ लेने के समय वहीं थे, तुम मेरे विद्रोही कैसे बन गये ?
मुझे आपके गणतन्त्र तथा करों से नफ़रत है !
यह व्यक्ति हमारे साथ जायेगा। क्या बाम्बसी के सिपाही बाकियों को नजरबन्द कर के रख लेंगे ?
हम पूछ सकते हैं ?
फैन्टम ! चलते फिरते भूत तथा पूर्वीय अंधकार के रखवाले आपका आदेश माना जायेगा !
शुक्रिया !
राष्ट्रपति लुआगा, मैं आपको जीवित देख कर अत्यन्त प्रसन्न हूँ।
मुझे भी प्रसन्नता है केप्टन, जीवन और मृत्यु में बहुत ही थोडा अन्तर था !
इनके साथ जनरल बाबाबू भी है, तुम उनके बन्दी थे और अब वे तुम्हारे बन्दी है, क्या मज़ाक है !
यह सब एक जादू के समान हुआ, फैन्टम के जादू के समान, कैप्टन !

(क्रमशः)

पृष्ठ ४१ से आगे

'पर एक शरीफ की तरह, आपको तो सोचना चाहिए था कि ऐसा कहना क्या मुनासिब होगा ?' फुर्तीसिह जी का गुस्सा ठंडाया तो समझाते हुए बोले। फिर एक हाथ में पलंग का पाया, और दूसरे में बाबा आदम के जमाने का, जगह-जगह से पैबंद लगा एक जूता लेकर, उन साहब पर गरजते हुए बोले, 'आप भी इसी प्रकार के हथियार संभाल कर चलिए मेरे साथ। आज तो उस बिगड़ू की भी हालत ही न बिगाड़दी तो मैं भी जोरू का गुलाम नहीं। पता नहीं कम्बख्त को मुझसे कौन सी पुश्तैनी दुश्मनी है, जो मेरे खिलाफ दूसरों को भड़काया करता है।

नए साहब ने भी उनके आदेशानुसार इसी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र संभाल लिए। कारण यह नहीं था कि बिगड़ू चाचा की धुनाई का उन्होंने पक्का फैसला कर लिया था, बल्कि मजबूरी यह थी कि ऐसा न करने पर उन्हें अपनी धुनाई का पक्का विश्वास था।

आगे-आगे लड़ाई को तैयार हुए फुर्तीसिह जी अपने हथियार संभाले लैफ्ट-राइट करते चल रहे थे, और उनके पीछे नए साहब कांपते हुए, अनूठे हथियारों से लैस छाया की तरह उनका अनुसरण करते हुए, विदूषक की भांति बढ़ रहे थे। जो भी देखता, इस अनोखे दृश्य को देखकर ठिठक कर रुक जाता। कइयों ने कारण जानना भी चाहा, पर फुर्ती सिंह जी मौनी बाबा ही बने रहे। उनको डर था कि बताने पर यदि बिगड़ू को मालूम हो गया तो सारा श्रम निष्फल ही न हो जाए, नए साहब तो जवाब क्या देते ? हां, यदि कोई रोने को कहता तो फर्माईश पर बुक्का फाड़कर रोने लगते।

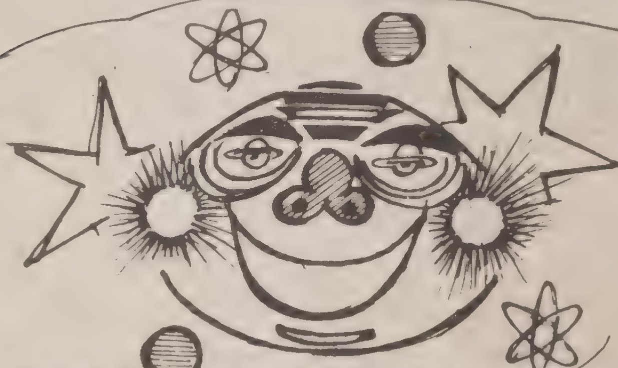
"अबे ओ बिगड़ू, तू चारों ओर से घिर चुका है" फुर्तीसिह जी ने उनके घर के सामने पहुंच कर एक देखी हुई फिल्म के डायलाग की नकल करते हुए किसी पुलिस आफिसर की तरह ललकारा—"चुपचाप घर से बाहर आकर आत्मसमर्पण कर दे, वरना आज जहन्नुम में तुझे पहुंचाकर ही घर में ठंढी होती हुई चाय पियूंगा।"

इस भयंकर आवाज को सुन

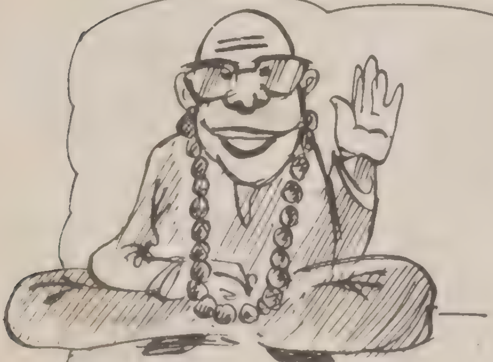
शेष पृष्ठ ५२ पर

इन्टरनेशनल

ज्योतिषी बनिये



आप प्रायः पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ते हैं कि फलां ज्योतिषी ने फलां भविष्य वाणी की है। धन्धा बड़ा चोखा है। प्रसिद्धि और पैसा दोनों हैं। हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा आये। साथियों यह बेकारी का जमाना है। नौकरियां सिफारिशी टट्टुओं को ही मिलती हैं जमाना हेराफेरी और तिकड़म का है। हम अपने पाठकों को इंटरनैशनल ज्योतिषी बनने के आसान गुर बता रहे हैं। इन पर अमल कर आप भी ऐसे ही तीसमारखां ज्योतिषी बन कर अपनी डूबती नैय्या पार लगा सकते हैं।



पं० पट्टाकुट्टम कूप मंडूकम

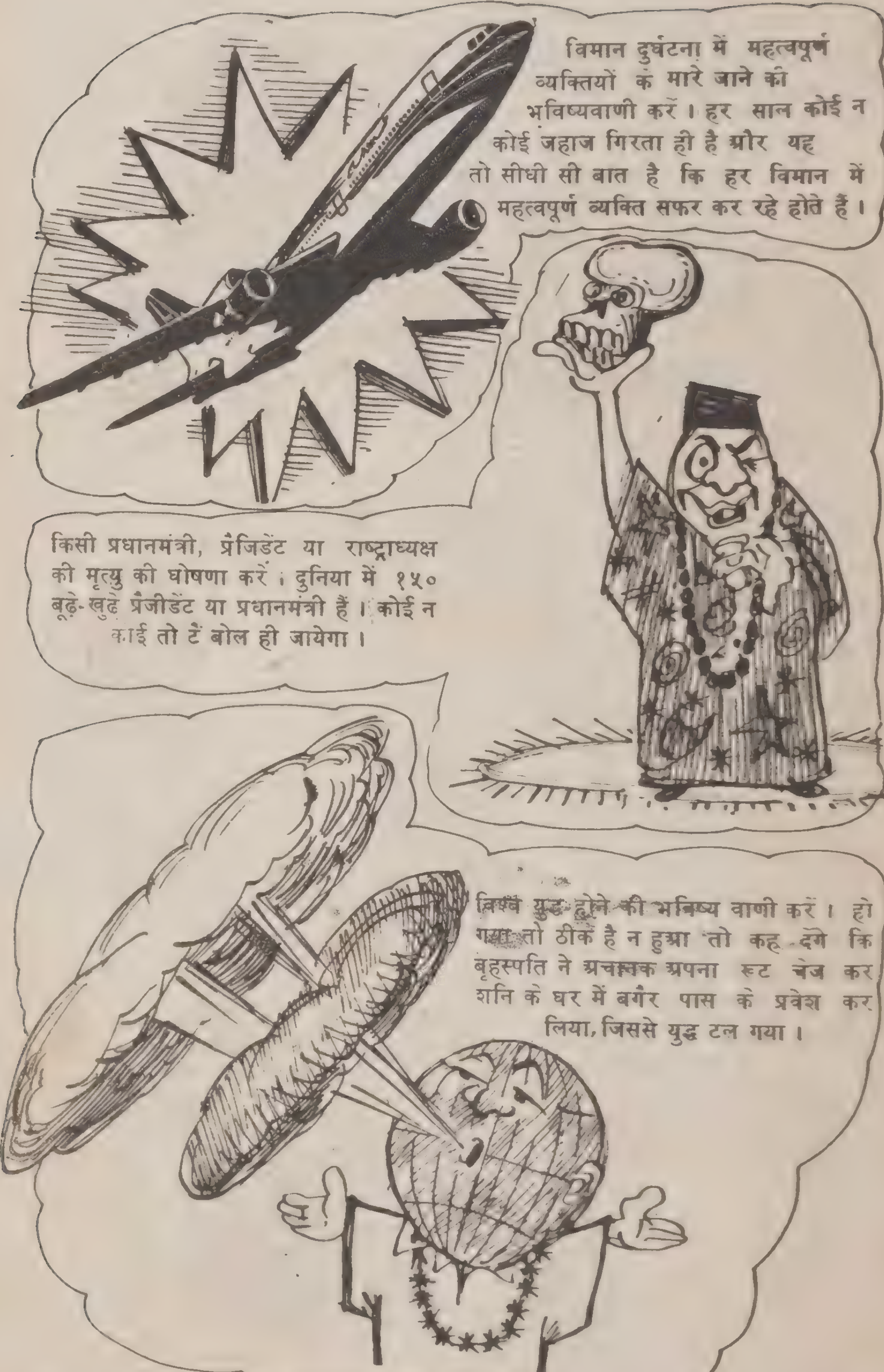


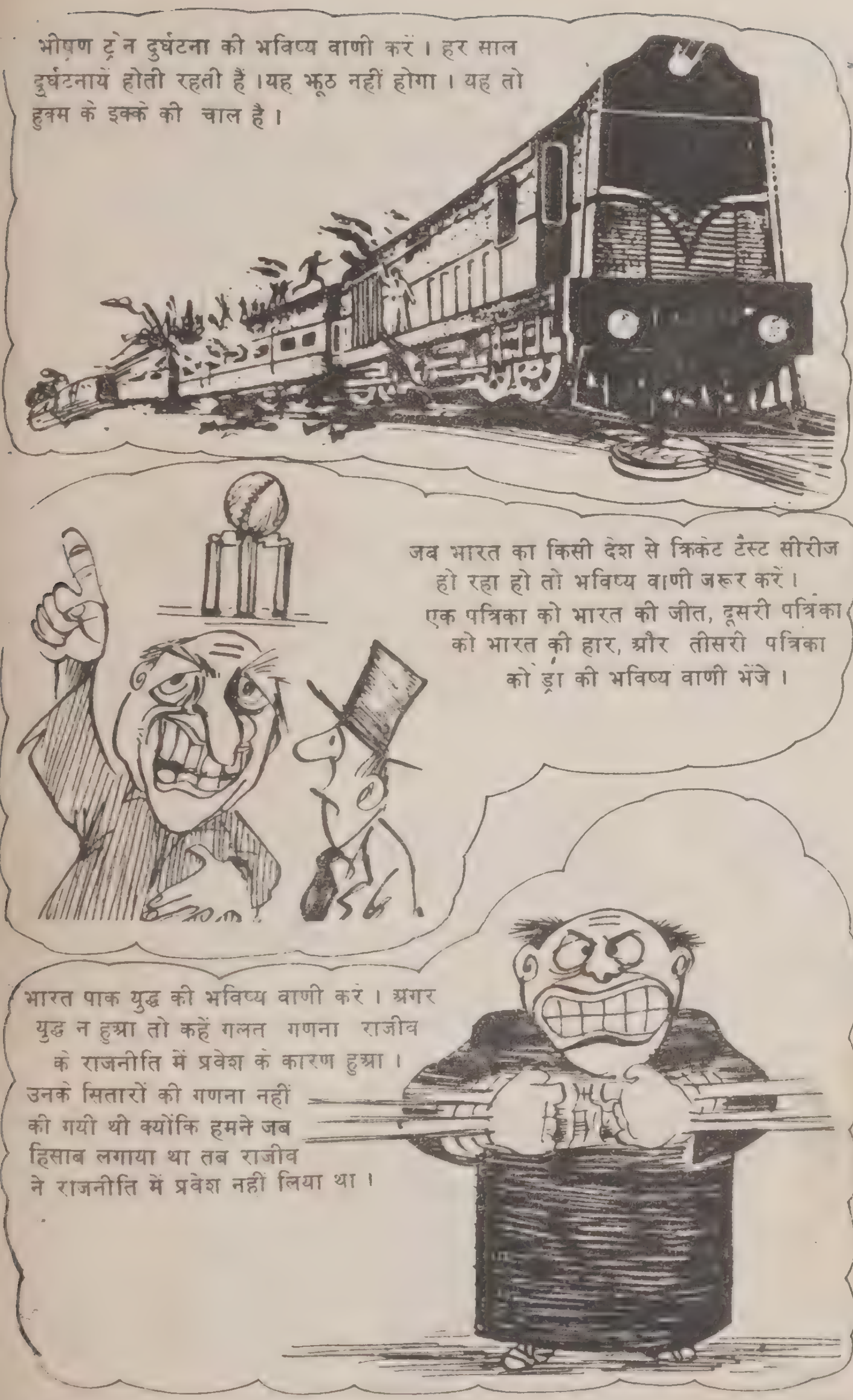
डा० हैफीसटस संटर्नस सिस्सोफस

नाम

सबसे पहले अपना ज्योतिष नाम रखिये। नाम रौबदार और ऐसा अटपटा होना चाहिए जैसे पेट की बीमारियों के डाक्टरी नाम होते हैं। आपका नाम लेने में लोगों को अपनी जुबान को ऐसे ही मरोड़े देने पड़ें जैसे कैब्रे डांसर अपनी कमर को देती है। दो नमूने हाजिर हैं।


एक रंग का या विभिन्न रंगों का चोगा सिलवाकर वही पहनें। सिर पर उस्तरा फेर कर बायल्ड ऐग सा बना लें। खोपड़ी पर मोम का पालिस रगड़ें। चेहरा शेव कर साफ करके तेल की मालिश करें। चश्मा पहनें जो पालिशदार हो।स्टेनलैस स्टील के नये बर्तन की तरह चमके। अन्दर की तरफ काला कागज चिपकायें। आपका चमकदार थोबड़ा देख आधा रौब सामने वाला वैसे ही खा जायेगा। चश्मे के अन्दर कागज चिपके होने के कारण आपको सामने वाला नजर नहीं आयेगा इसका
लाभ यह होगा कि आपको यह देख हंसी नहीं आयेगी कि सामने बैठा बेवकूफ कितनी गौर से आपकी ऊंटपटांग भविष्य वाणियां सुन रहा है।
अपनी भविष्य वाणियां लिख-लिख कर देश भर के पत्र-पत्रिकाओं को रोज डाक में डालते रहें। कैसी भविष्य वाणियां करनी हैं वह हम आगे बता रहे हैं। फिलहाल आप लैटरबक्स में लैटर घुसेड़ने की प्रैक्टिस करें। भविष्यवाणियों की फोटो स्टेट नकल अपने पास रखते जायें।
दुनिया १९८० में नष्ट नहीं होगी
एक साल की पक्की गारंटी
भविष्य वाणियां
पहले नैशनल व इंटरनेशनल भविष्यवाणियों के गुर आजमायें।
और ज्योतिषी दुनिया नष्ट होने की भविष्य वाणी करते हैं,आप न होने की करें। अगर दुनिया नष्ट हो भी गई तो कोई आपकी गलती पकड़ने वाला ही नही बचेगा। आप को कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। यह फार्मूला याद रखें।


विमान दुर्घटना में महत्वपूर्ण व्यक्तियों के मारे जाने की भविष्यवाणी करें। हर साल कोई न कोई जहाज गिरता ही है और यह तो सीधी सी बात है कि हर विमान में महत्वपूर्ण व्यक्ति सफर कर रहे होते हैं।
किसी प्रधानमंत्री, प्रेजिडेंट या राष्ट्राध्यक्ष की मृत्यु की घोषणा करें। दुनिया में १५० बूढ़े-खुढे प्रेजीडेंट या प्रधानमंत्री हैं। कोई न कोई तो टें बोल ही जायेगा।
विश्व युद्ध होने की भविष्य वाणी करें। हो गया तो ठीक है न हुआ तो कह देंगे कि बृहस्पति ने अचानक अपना रूट चेंज कर शनि के घर में बगैर पास के प्रवेश कर लिया, जिससे युद्ध टल गया।


भीषण ट्रेन दुर्घटना की भविष्य वाणी करें। हर साल दुर्घटनायें होती रहती हैं। यह झूठ नहीं होगा। यह तो हुक्म के इक्के की चाल है।
जब भारत का किसी देश से क्रिकेट टैस्ट सीरीज हो रहा हो तो भविष्य वाणी जरूर करें। एक पत्रिका को भारत की जीत, दूसरी पत्रिका को भारत की हार, और तीसरी पत्रिका को ड्रा की भविष्य वाणी भेजे।
भारत पाक युद्ध की भविष्य वाणी करें। अगर युद्ध न हुआ तो कहें गलत गणना राजीव के राजनीति में प्रवेश के कारण हुआ। उनके सितारों की गणना नहीं की गयी थी क्योंकि हमने जब हिसाब लगाया था तब राजीव ने राजनीति में प्रवेश नहीं लिया था।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब



राजेन्द्र गुप्ता, गुप्ता निवास, सराय पाली, (म. प्र.). 19 वर्ष, संगीत, साहित्य पढ़ना।



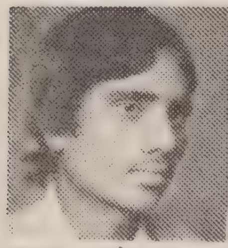
मनोज कुमार सोभावत, म. न. 382, हजारी बाग, अजमेर, राजस्थान, 19 वर्ष।



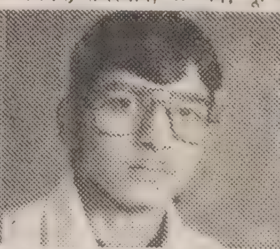
संजय कुमा वर्मा, 206 भगवान भवन, प्रेम नगर, बरेली यू. पी.. 12 वर्ष।



विनायक अंबादास भोर, मयूर को. आ. सोसायटी नं. 2, खोली 32, आगरा बाजार।



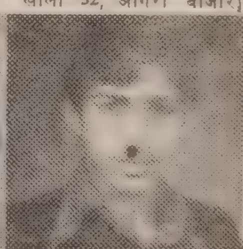
ब्रह्मानन्द सरोया, डब्लू जैड 255, जेड रोड, नांगलराय बाजार, नई दिल्ली, 18 वर्ष।



नरेश कुमार, डब्लू जैड 255, जेड रोड, नांगल राय, नई दिल्ली, 110046, 18 वर्ष।



स्वरन वैद्य, होटल सम्भना, बीरगंज नेपाल, 22 वर्ष, ताश खेलना, मोटर चलाना सीखना।



सुमन नैथानी, घनश्याम बुक डिपो, बद्रीनाथ मार्ग, कोटद्वार गढ़वाल, 19 वर्ष।



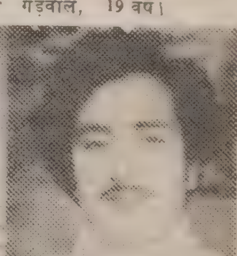
राजीव गर्ग, 186/11, आदंपुरी, मुजफ्फर नगर, 15 वर्ष, मस्ती मारना।



मुनेन्द्र पाल 'तान्हा' वजीरगंज, जिला बदायूं, 17 वर्ष, स्टाम्प कलेक्शन, रेडियो सुनना।



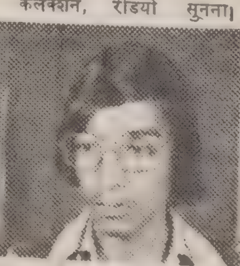
अशवनी कुमार सुखीजा, हंस राज अशवनी कुमार, क्लाथ मर्चेंट गिलालाबाद।



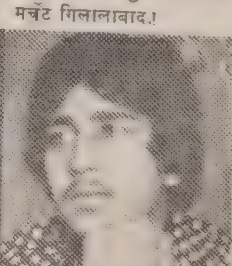
अशोक कुमार गाबा, गाबा बूट हाउस, गिलालाबाद, (गरवी), 28 वर्ष, दीवाना पढ़ना।



ताजवर मसूद, रिजनल हौस्पीटल फुसरो. पो. : बेरमो, जिला : गिरिडाह, (बिहार),



मनोज अचलिया 'पपन' 116 देवाली, उदयपुर, (राज.), 15 वर्ष, दीवाना पढ़ना।

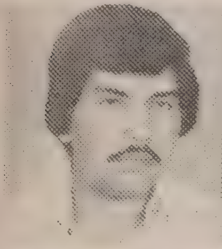


युधिष्ठर राजमोदी, 'पप्पू' मोदी प्रिन्टर्स नोहर, जिला (श्री गंगानगर), राज.।



अमिता गुप्ता, 27/552, शक्ति नगर, 15 वर्ष, फिल्म देखना, क्रिकेट खेलना।

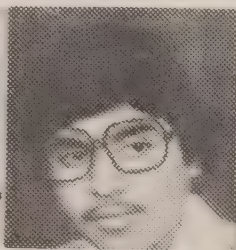
दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।



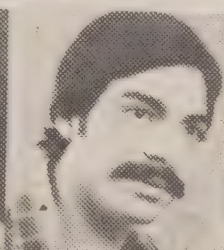
राकेश कुमार, ए-212 (470), मोती बाग, नई दिल्ली-21, 24 वर्ष, टेप सुनना।



विपन शर्मा, खन्ना ब्यूटी सेन्टर, 3 न्यू मार्केट, (पंजाब), 19 वर्ष।



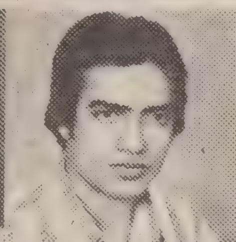
किशोर कुमार, मयूर सलेक्शन, फैंसी स्टोर्स, गोल बाजार, बिलासपुर (म. प्र.), 20 वर्ष।



अमरजीत पलाना, 3168 अहुजा नगरी, अबोहर (पंजाब), 22 वर्ष, फरमाईश भेजना।



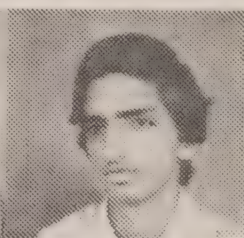
मनजोत सिंह बग्गा, अम्बार होटल रायगढ़ (म. प्र.), 496001, 16 वर्ष, सैर करना।



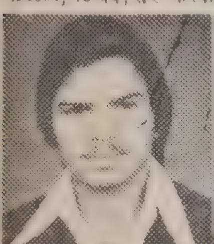
नरेश कुमार हरदोईया, 124/127, गोविन्द नगर, कानपुर-208006, 22 वर्ष।



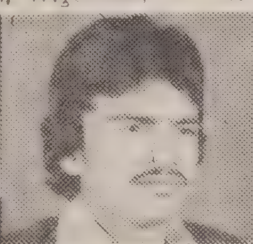
जबीन श्रेष्ठ, अस्पताल मार्ग, भद्रपुर-4, मेचा आंचल, नेपाल, 16 वर्ष, पढ़ना



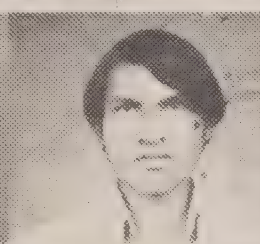
श्रीकृष्ण पुरोहित, रेलवे सेक्शन, पीली बंगा, 17 वर्ष, पत्र-मित्रता करना



राजेन्द्र सिंह सोनी, 54 सिगर, ब्राडीया का सहरो, 18 वर्ष, टिकट खरीदना।



मोहम्मद इसहाक जंगी, भिस्ती पोल, 342001, जोधपुर (राज.), 22 वर्ष।



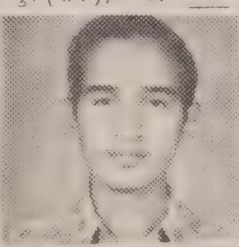
रमेश आर. तागड़े 158, चंदन नगर, नागपुर-44006, (महाराष्ट्र), 21 वर्ष, पत्र-मित्रता।



योगेन्द्र दास श्रेय, 60-थहिती टोल, काठमाण्डू : 12, (नेपाल), 19 वर्ष।



हरीश बहल 'पप्पू', 1916/30, शिवपुरी, लुधियाना, 21 वर्ष, दीवाना पढ़ना।



कृष्ण लाल शर्मा (विन्दी), मकान नं. 889015, नया बांस, अम्बाला नगर, 21 वर्ष।

हमारा पता: दीवाना फ्रैंडस क्लब ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२।
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ______________________

पता ______________________

____

आयु ____ **शौक** ______________________

तेज प्रैस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

पृष्ठ ४५ से आगे

कर बिगड़ू चाचा तो नहीं निकले, पर उनके दो कद्दावर शागिर्द बाहर आते दिखे। फुर्ती सिंह जी वीरता की साक्षात मूर्ति की भांति शागिर्दों का मलीदा बनाने के इरादे से नए साहब से जोश में बोले, 'सांप न सही, संपोले ही सही' और शागिर्दों के पास आते ही जैसे ही उन्होंने अपने अद्‌भुत हथियारों का प्रयोग करने का प्रयत्न किया, दोनों शागिर्दों ने उनके हाथों से एक-एक हथियार लेकर उनकी कुटम्मस करनी शुरू कर दी।

नए साहब तो नजारा देखते ही 'हरे राम, त्राहि माम' करते हुए, चार-चार फुट के डग भरते हुए भागे। कुछ देर बाद ही फुर्ती सिंह जी भी बचते हुए 'मार डाला बचाओ, बचाओ' कहते हुए आ गए। मार खाने से बड़ा दुख था, उनको अपने बेशकिमती जूते के हाथ से जाने का, नए साहब से लाल-पीले होते हुए बोले 'देख लिया साहब आपको भी, अवश्य ही आप गद्दार विभीषण के खानदान के हैं। चार घंटे में मेरा मकान खाली हो जाना चाहिए। वरना अपने घर का सारा कबाड़ आपके कमरे में भर दूंगा।'

नए साहब की हालत तो सांप-छछुन्दर जैसी हो रही थी। बेचारे बहुत रोए, गिड़गिड़ाए, हाथ जोड़े, पैर छुए, पर फुर्तीसिंह जी का दिल पत्थर की तरह पिघला ही नहीं बिगड़ू चाचा के कानों में बात नहीं पड़ी तो भागे-भागे आए और उन साहब को समझाते हुए कुछ बताने लगे और अगले पल ही नए साहब किसी नेता की तरह घर से बाहर आकर फुर्तीसिंह जी के विरुद्ध अपनी परेशानी को एक लम्बे भाषण के रूप में हाथ झटक-झटक कर इकट्ठा हुए मुहल्लों वालों से कहने लगे। फुर्तीसिंह जी ने सुना तो घबराते हुए वहां आए और हाथ जोड़कर बोले, 'अरे साहब, आप जब तक चाहें, बाप का मकान समझकर रहें, किराए की भी कोई जरूरत नहीं।'

नए साहब बड़े खुश हो भीड़ से बाहर आ गए। उनसे भी अधिक प्रसन्न थे बिगड़ू चाचा। क्योंकि उनके शागिर्दों में एक का नाम और जुड़ गया था। ●



रंजीता :
छायाकार : जयन्त दा
दीवाना

दर्शकों की लैला रंजीता कौर

पंजाब की अल्हड़ युवती राँबी कौर बम्बई पहुंच कर रंजीता बनेगी और 'लैला मजनूं' की लैला बनकर दर्शकों का दिल जीतेगी इसकी किसी को भी उम्मीद नहीं थी।

सामान्य कद काठी, नाक नक्श आकर्षक रंजीता की जोड़ी जब ऋषि कपूर के साथ बनकर 'लैला मजनूं' के रूप में पर्दे पर आई तो फिल्म की सफलता के साथ-साथ ऋषिकपूर और रंजीता के रोमांम के चर्चे भी खूब चले।

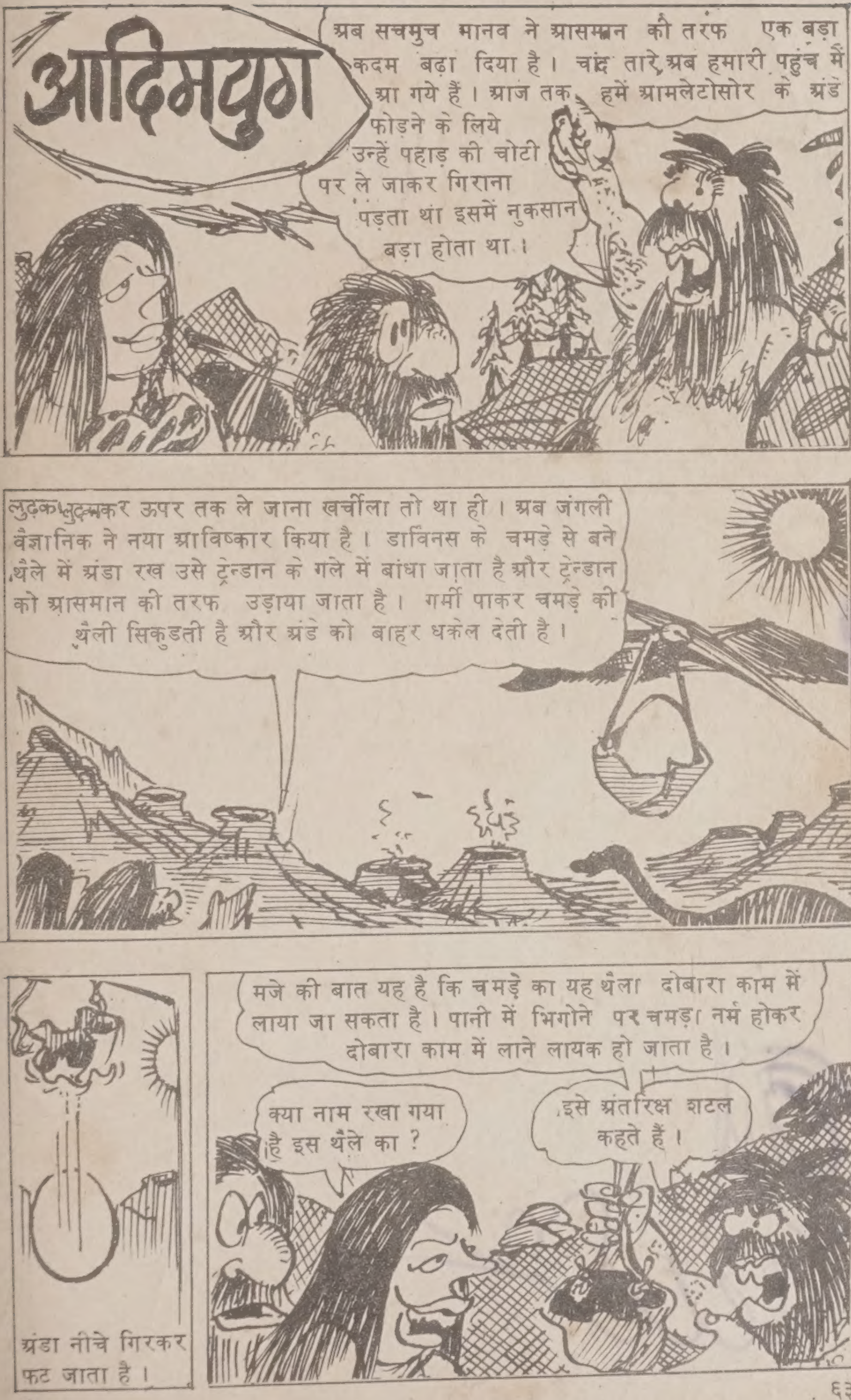
'पति पत्नि और वो' में रंजीता ने 'वो' की भूमिका इतने सहज ढ़ंग से निभाई कि मंझे हुए कलाकार संजीव कुमार के सामने रंजीता ने अपनी पहचान दी। अपने अभिनय के बल पर रंजीता ने काफी ख्याति प्राप्त की और एक के बाद एक नई फिल्में साइन करने लगी।

मिथुन चक्रवर्ती और रंजीता की एक दो फिल्में हिट होने पर इन दोनों में रोमांस रहा और काफी समय तक चला भी। मिथुन अपनी पत्नी हेलना को पहले ही तलाक दे चुका था क्यों कि वह फिल्मों में अभिनय करना चाहती थी और नायिका बनने की इच्छुक थी।

मिथुन की लोकप्रियता से रंजीता भी प्रभावित रही लेकिन इन दोनों का रोमांस ही चलना था, विवाह का संजोग नहीं था। कुछ समय बाद मिथुन और रंजीता की जोड़ी भी टूट गई। दोनों में अनबन हो गई। यहाँ तक कि रंजीता ने मिथुन के साथ फिल्में साइन करने से भी इंकार कर दिया।

मिथुन के जीवन में रंजीता के बाद योगिता बाली आई जो कुछ समय तक रोमांस में उलझी रही और बाद में इसे छोड़ कर चली गई।

रंजीता अभिनेत्री के रूप में चर्चित रही है। जब उनसे उनके मिथुन के साथ रोमांस और फिर अलगाव के बारे में पूछा तो वह बोली, कैसा रोमांस कैसा अलगाव? फ्रेंडशिप को लव नहीं कहते। मैंने कभी मिथुन से लव नहीं किया। एक साथी कलाकार की तरह डील किया है। मुझे 'बी ग्रेड के बाद जब 'ए ग्रेड' की हीरो के साथ फिल्में मिलने लगीं तो नैच्युरल्ली मुझे मिथुन को छोड़ना ही था क्योंकि वह 'बी ग्रेड़' में आता है। इसे आप अलगाव कहते हैं तो यह गलत है'। वह अब भी मेरा अच्छा फ्रेंड है। भविष्य में अगर किसी प्रोडयूसर ने मुझे अच्छे बैनर में मिथुन के साथ साइन करना चाहा तो मैं कभी इंकार नहीं करूंगी। **विजय भारद्वाज**


आदिमयुग
अब सचमुच मानव ने आसमान की तरफ एक बड़ा कदम बढ़ा दिया है। चांद तारे अब हमारी पहुंच में आ गये हैं। आज तक हमें आमलेटोसोर के अंडे फोड़ने के लिये उन्हें पहाड़ की चोटी पर ले जाकर गिराना पड़ता था इसमें नुकसान बड़ा होता था।
लुढ़कालुढ़काकर ऊपर तक ले जाना खर्चीला तो था ही। अब जंगली वैज्ञानिक ने नया आविष्कार किया है। डार्विनस के चमड़े से बने थैले में अंडा रख उसे ट्रेन्डान के गले में बांधा जाता है और ट्रेन्डान को आसमान की तरफ उड़ाया जाता है। गर्मी पाकर चमड़े की थैली सिकुडती है और अंडे को बाहर धकेल देती है।
अंडा नीचे गिरकर फट जाता है।
मजे की बात यह है कि चमड़े का यह थैला दोबारा काम में लाया जा सकता है। पानी में भिगोने पर चमड़ा नर्म होकर दोबारा काम में लाने लायक हो जाता है।
क्या नाम रखा गया है इस थैले का ?
इसे अंतरिक्ष शटल कहते हैं।

R.N. 10598/65 Regd. No. D(DN)-275

